Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद : अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए तो वे उनको उनका भरपूर प्रतिफल प्रदान करेगा और अपने फ़ज़ल से उनको मज़ीद देगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 16

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

9 रमज़ान 1442 हिज्री कमरी 22 शहादत 1400 हिज्री शम्सी 22 अप्रैल 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

फ़ज्र की नमाज़ का महत्तव

(1216) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जबकि आप नमाज़ में होते सलाम किया करता था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे उत्तर देते थे। जब हम (हिज्रत हब्शा से) लौट कर आए तो मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सलाम किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उत्तर नहीं दिया और (बाद में फ़रमाया नमाज़ में भी एक व्यस्तता होती है।

(1217) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने किसी काम के लिए मुझे भेजा, मैं चला गया। फिर वह काम पूरा करके वापिस लौटा। मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सलाम किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे उत्तर नहीं दिया। मेरे दिल में जो ख़्याल आए उन्हें अल्लाह ही बेहतर जानता है। मैं ने अपने दिल में कहा : शायद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझ पर नाराज़ हैं इसलिए कि मैं ने देर कर दी है। फिर मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सलाम किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे उत्तर नहीं दिया इस पर मेरे दिल को पहले से भी ज़्यादा दुख हुआ। फिर मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सलाम किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे उत्तर दिया और फ़रमाया : मैं नमाज़ पढ़ रहा था और उसी ने मुझे उत्तर देने से रोका।

(व्याख्या) हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली-उल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : कुछ फ़ुक़ाहा की राय यह है कि सलाम का उत्तर दुआ के रूप में अपने दिल में दे दें, बग़ैर इसके कि मुँह से शब्द वाअलैकुम अस्सलाम निकालें, या यह कि इशारा से उत्तर दें। यह राय इमाम बुख़ारी ने पूर्णता रद्द की हैं रिवायत नम्बर 1216, 1217 से ज़ाहिर है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ से फ़ारिग़हो कर सलाम का उत्तर दिया है। यही जम्हूर का मत है।

(सही बुख़ारी, भाग 2 प्रकाशन क़ादियान 2006)

मेरे दिल में बड़ा दर्द पैदा होता है कि मैं क्या करूँ कि हमारी जमाअत सच्ची तक़्वा तथा पवित्रता धारण कर ले।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

22 जून 1899 ई

हज़रत अक़दस ने कल बातों बातों में फ़रमाया :कि

"अवश्य याद रखो कि ख़ुदा अपने बंदा को कभी नष्ट नहीं करेगा और हरगिज़ नहीं उठाएगा जब तक उसके हाथ से वे बातें पूरी न हो जाएं जिनके लिए वह आया है। उसे किसी की लड़ाई और किसी की बददुआ कोई हानि नहीं पहुंचा सकती।"

इस की तहरीक यूं हुई कि किसी ने कहा कि अब विरोधी मुलहम् 2 साहिब कहते हैं कि इस सिल्सिला की तबाही अब निकट है । كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا (अल-कहफ़:6) फिर बड़े दर्दे दिल से फ़रमाया कि

तक़्वा तथा पवित्रता

"कल अर्थात 22 जून 1899 ई बहुत बार ख़ुदा की तरफ़ से इल्हाम हुआ कि तुम लोग मुत्तक़ी बन जाओ और तक़्वा की बारीक राहों पर चलो तो ख़ुदा तुम्हारे साथ होगा।"

फ़रमाया "इससे मेरे दिल में बड़ा दर्द पैदा होता है कि मैं क्या करूँ कि हमारी जमाअत सच्ची तक़्वा तथा पवित्रता धारण कर ले।" फ़रमाया कि " मैं इतनी दुआ करता हूँ कि दुआ करते करते कमज़ोरी का ग़लबा हो जाता है और कई बार बेहोशी और हलाकत तक हालत पहुंच जाती है। फ़रमाया जब तक कोई जमाअत ख़ुदा की निगाह में मुत्तक़ी न बन जाए। ख़ुदा की सहायता उसके साथ हो नहीं सकती।" फ़रमाया तक़्वा सार है समस्त पवित्र पुस्तकों का और तौरात तथा इंजील की शिक्षाओं का। क़ुरआन करीम ने एक ही शब्द में ख़ुदा तआला की महान इच्छा और पूरी रज़ा का प्रकटन कर दिया है।" फ़रमाया।" मैं इस फ़िक्र में भी हूँ कि अपनी जमाअत में से सच्चे मुत्तक़ियों, धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने वालों और अल्लाह तआला की तरफ आने वालों को को अलग करूँ और कुछ धार्मिक काम उन्हें सपुर्द करूँ और फिर में दुनिया के कामों में लीन रहने वालों और रात दिन दुनिया के मुर्दा चीज़ों की चाह में ही जान खपाने वालों की कुछ भी परवा न करूँगा।....

रात किस दर्द से हज़रत इमाम फ़रमाते हैं। आह! अब तो ख़ुदा के सिवा कोई भी हमारा नहीं। अपने पराए सब ही इस पर तुले हुए हैं कि हमें अपमानित कर दें । रात दिन हमारे बारे में मसीबतों और गर्दिशों के इंतिज़ार में बैठे हैं। अब यदि ख़ुदा तआला हमारी सहायता न करे तो हमारा ठिकाना कहाँ। "

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 253 से 260 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

सम्मान की रक्षा एक उच्च स्तर का कार्य है लेकिन यदि इस बात को दृष्टिगत रखते हुए कि तब्लीग़ के काम में हर्ज न हो या और किसी ऐसे काम के लिए जो क़ौमी या शरई या दीनी हो इन्सान अपने सम्मान को क़ुर्बान कर दे और अपने पर आरोप को रहने दे तो यह व्यक्ति यक़ीनन उस व्यक्ति से जो अपने सम्मान की रक्षा की मांग किसी नेक इरादा से करता है ज़्यादा उच्च स्तर पर है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : जिस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बादशाह ने बुलाया है उनके लिए दो ही रास्ते खुले थे या फ़ौरन निकल आते या पहले रिहा करा के निकलते। ये दोनों कार्य वास्तव में एक दुसरे के विपरीत हैं लेकिन दो विभिन्न दृष्टिकोण रखने वालों के अनुसार या तो ये दोनों कार्य नेकी बन जाते हैं और या दोनों बदी और वह इस तरह पर कि यदि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम घमंड और ख़ुदपसंदी के अधीन ऐसा करते कि पहले लोग गुनाह का इक़रार करें मैं फिर निकलूँगा तो यह गुनाह हो जाता। इसी तरह यदि वह यह तरीक़ इख़तियार करते कि अपने नफ़स के आराम के लिए बग़ैर किसी दीनी फ़ायदा को दृष्टिगत रखने के तुरतं बाहर निकल आते तो भी यह गुनाह होता लेकिन उन्होंने निकलने से इन्कार किया इसलिए नहीं कि वह घमंडी थे बल्कि जैसा कि उन्होंने स्वयं बताया है केवल इसलिए कि उनका एक मोहसिन इस भ्रम में ग्रस्त न रहे कि यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने उससे ग़द्दारी की है और इस आला जज़बे की वजह से उनका यह कार्य एक आला दर्जा की नेकी थी। परन्तु एक चौथा दृष्टिकोण भी है जिस के अधीन तुरंत निकल आना एक नेकी बन जाता है और इस दृष्टिकोण को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इख़तियार किया है। यह दृष्टिकोण अपने फ़र्ज़ मंसबी के पूरा करने का ख़्याल है। एक नबी या मुअल्लिम ख़ुदा तआला की ओर से लोगों को तब्लीग़ करने के लिए आधारित होता है

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-5)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का अख़बार DIE ZEIT को इंटरव्यू

एक जर्मन मेहमान औरत KATHJA SOMMER साहिबा ने अपने विचारों का इस तरह प्रकटन किया। ऐसे महसूस हुआ जैसे हमारा एक रुहानी बाप है और वह हम से बात कर रहा है और हम सब उस के बच्चे हैं और इस के सामने बराबर हैं। कोई छोटा बड़ा नहीं है।

कई लोगों ने इस बात पर इंतिहाई ख़ुशी का प्रकटन किया कि हुज़ूर अनवर ने यह संदेश दिया है कि उस मस्जिद के दरवाज़े सब के लिए खुले हैं

His holiness मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कहा यहां अब कोई भौतिक वस्तुएं बेचीं नहीं जाएँगी। यह अब ख़ुदा का एक घर है। इस में वह चीज़ें प्रस्तुत की जाएँगी जो बुलंद और ख़ूबसूरत अख़लाक़ी इक़दार को प्रकट करें। मुहब्बत, भाईचारा और हमदर्दी इस घर से फैलेंगे।

हम समस्त इन्सानों के लिए, जो मुश्किलात में ग्रस्त हों, उपस्थित हैं, यह मस्जिद समस्त इन्सानों और धर्मों के लिए खुली है। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कहा कि संसार को लड़ाई, शोषण, और उग्रवाद की आवश्यकता नहीं। संसार को मुहब्बत, सब्र और अमन की आवश्यकता है। इसके बाद जमाअत के क़ानूनी स्टेटस, स्कूलों में इस्लामीयात की शिक्षाऔर लार्ड मेयर की तक़रीर इत्यादि का वर्णन किया है।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

जर्नलिस्ट ने एक प्रश्न यह किया कि यहां आप लोगों का ख़ुतबा जुम्अ जर्मन भाषा में भी होता है इस का क्या कारण है?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यहां केवल जर्मनी की बात नहीं। सारी दुनिया में वहां की स्थानीय भाषाओं में भी होता ताकि जो लोग स्थानीय भाषाएं जानते हैं उनको भी समझ आए। इंडोनेशिया में इंडोनेशियन भाषा में होता है। पाकिस्तान में उर्दू भाषा में होता है और यू.के. की जमाअतों में अंग्रेज़ी भाषा में भी होता है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मैं ख़ुत्बा जुम्अ: उर्दू भाषा में देता हूँ और इस का आठ विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो रहा होता है। इस्लामी शिक्षा की दृष्टि से कोई ऐसा हुक्म नहीं है कि केवल अमुक विशेष भाषा में ही ख़ुतबा दिया जाए।

इस इंटरव्यू के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ जैसे ही स्टेज से नीचे पधारे तब एक बोज़नीन महिला जो आज के इस समारोह में शामिल थीं, हुज़ूर अनवर के क़रीब आ गईं। उनकी आँखों से निरन्तर आँसू जारी थे और बे-इख़्तियार कह रही थीं कि मैंने हुज़ूर अनवर को ख़्वाब में देखा है। मैंने हुज़ूर अनवर का चेहरा आसमान से उतरते ख़्वाब में देखा है। मैंने देखा कि हुज़ूर का चेहरा बहुत ही ख़ूबसूरत था, बहुत नूर था। सफ़ैद लंबी दाढ़ी थी और सिर पर सफ़ैद पगड़ी थी। उस महिला ने ख़्वाब में ही रोना शुरू कर दिया और बे-इख़्तियार रोती गई। नींद से जागने के बाद भी रोती रही।

यह ख़्वाब उस महिला ने दो वर्ष पूर्व देखा था परन्तु आज भी इस के ज़हन में नक़्श था।

जब यह औरत हुज़ूर अनवर के सामने खड़ी थी तो निरन्तर रो रही थी और कहती थी कि मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं हुज़ूर के सामने खड़ी हूँ।

इसने अपना एक और ख़्वाब सुनाया जो 12 वर्ष पूर्व उसने देखा था कि एक सफ़ैद रंग का घोड़ा उतरते देखा है। उस घोड़े ने मुझे एक छोटा सफ़ैद रंग का घोड़ा दिया है और साथ ही उनको आवाज़ आई कि इस की हिफ़ाज़त करना यह तुम्हारे लिए है।

इस महिला ने यह ख़्वाब वर्णन करके हुज़ूर अनवर से इस की ताबीर चाही। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। इस ख़्वाब की एक ताबीर यह भी हो सकती है कि पुराने ज़माने में घोड़े हिफ़ाज़त और सवारी के लिए प्रयोग होते थे ख़ास तौर पर जंगों में चूँकि इस ज़माने में जिहाद तलवार का नहीं है बल्कि क़लम का है। इसलिए आप को ध्यान दिलाया गया है कि आप क़लम का जिहाद करें अर्थात ज़्यादा से ज़्यादा ज्ञान प्राप्त करें और सच्चाई को पहचानने का प्रयास करें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तो यह उसकी एक ताबीर हो सकती है।

अंत में वह फ़ातिमा साहिबा फिर कहने लगीं कि मैंने हुज़ूर अनवर को बिल्कुल इसी रूप में ख़्वाब में देखा है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला आपको अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और आपके लिए यह ख़्वाब मुबारक फ़रमाए।

इसके बाद जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मार्की से बाहर पधारे तो समस्त बच्चे एक लाइन में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेह से बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

इसके बाद लोकल मज्लिस-ए-आमला, वक़ारे अमल में हिस्सा लेने वाले लोग और जायदाद विभाग ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

इस अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की छत पर गुम्बद रखने के बारे में हिदायतें दीं कि किस तरह आप गुम्बद के वज़न की दृष्टि से छत को मज़बूत कर सकते हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने यहां से प्रस्थान से पूर्व सदर साहिब जमाअत HANAU को हिदायत दी कि जो मस्जिद का मीनर ENTRANCE है और इसका जो बरामदा है और त्रिकोण जैसी छत है इस छत के सामने वाले हिस्सा के ऊपर एक छोटा सा मीनारा बनाएँ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने निरंतर उसका एक नक़्शा बना कर दिखाया।

सम्मान्नीय मेहमानों के विचार :

आज के इस समारोह में शामिल होने वाले बहुत से मेहमानों ने अपने विचार और हार्दिक भावनाओं का प्रकटन किया। बहुत से मेहमानों ने इस बात का प्रकटन किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के भाषण ने उनके दिल पर गहरा प्रभाव छोड़ा है और ये मेहमान इस प्रभाव का प्रकटन किए बिना नहीं रह सके।

एक औरत SCHNDLER साहिबा ने अपने भावनाओं का प्रकटन करते हुए कहा। आज ख़लीफतुल मसीह के भाषण का प्रत्येक शब्द वास्तव पर आधारित था। ख़लीफतुल मसीह की तबीयत धीमी है। बहुत मुहब्बत करने वाले और प्रभावित करने वाले व्यक्ति हैं। ख़लीफ़ा ने आज अपने भाषण में हमें इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा बताई। मैंने आँखें बंद कर लीं और ख़लीफ़ा की बातों को सुनती जाती थी। ऐसा मालूम होता था कि संसार का कोई अमन वाला इन्सान मुहब्बत की शिक्षा दे रहा है। ऐसी शिक्षा तो मुझे चर्च में भी कभी नहीं मिली।

एक जर्मन मेहमान औरत MRENE PRUSSIG ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा। हमारी शिक्षा है कि पड़ोसी से मुहब्बत करो। परन्तु हमारे पास केवल शिक्षाएं ही रह गई हैं। आज हुज़ूर अनवर का भाषण सुन कर ऐसे लगा कि यह शिक्षाएं फिर से ज़िन्दा हो गई हैं। मैं

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु कोई मामूली आदमी नहीं थे, निहायत उच्च स्तर के आचरण आप रज़ियल्लाहु अन्हु में पाए जाते थे दुनियावी प्रतिष्ठा के लिहाज़ से आप रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत प्रसिद्ध थे, इस्लाम में सबक़त रखते थे, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हु से अत्यधिक प्रसन्न थे

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद, दो नूरों वाले हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

अल्लाह की क़सम यदि तुम ने मुझे क़तल कर दिया तो फिर कभी इकट्ठे नमाज़ नहीं पढ़ सकोगे और कभी भी इकट्ठे हो कर दुश्मन का मुक़ाबला नहीं कर सकोगे और ज़रूर तुम आपस में मतभेद करोगे और इस तरह तुम उलझ कर रह जाओगे (उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु)

हज़रत ज़ैद बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हो कर निवेदन किया कि ये अंसार दरवाज़े पर हाज़िर हैं और कह रहे हैं कि यदि आप पसंद फ़रमाएं तो हम दूसरी बार अल्लाह के अंसार बनने को तैयार हैं, इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया नहीं, क़िताल कदापि नहीं करना

चार मरहूमीन आदरणीय मौलवी मुहम्मद इदरीस तीरू साहिब मुबल्लिग़-ए-सिलसिला एयवरी कोस्ट, आदरणीया अमीना नाईगा कायरे साहिबा पत्नी आदरणीय मुहम्मद अली कायरे साहिब अमीर और मिशनरी इंचार्ज युगांडा, आदरणीय लुई कज़क साहिब आफ़ सीरिया और आदरणीया फ़र्हत नसीम साहिबा रब्वा पत्नी आदरणीय मुहम्मद इबराहीम साहिब हनीफ़ सारीचोरी की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 मार्च 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन चल रहा है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी वफ़ात से या जब उपद्रव ज़ोरों पर था इस से तक़रीबन एक वर्ष पहले आख़िरी हज किया। बहरहाल उनका जो आख़िरी हज था उस वक़्त उपद्रव फेलालाने वालों ने सिर उठाना शुरू कर दिया था और हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस को बड़ी शिद्दत से महसूस किया था। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज से वापसी पर हज़रत मुआविया भी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मदीना आए। कुछ दिन ठहर कर आप वापिस जाने लगे तो आपने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से अलग मिल कर निवेदन किया कि उपद्रव बढ़ता हुआ मालूम होता है। यदि आज्ञा हो तो मैं इसके सम्बन्ध में कुछ निवेदन करूँ। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कहो। इस पर उन्होंने कहा कि प्रथम मेरा मश्वरा यह है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे साथ शाम (देश) चलें क्योंकि शाम में हर तरह से अमन है और किसी किस्म का फ़साद नहीं। ऐसा न हो कि अचानक किसी किस्म का उपद्रव उठे और उस वक़्त कोई इंतिज़ाम न हो सके। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको उत्तर दिया कि मैं रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निकटता को किसी अवस्था में नहीं छोड़ सकता चाहे शरीर की धज्जियाँ उड़ा दी जाएं। हज़रत मुआविया ने कहा फिर दूसरा मश्वरा यह है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे आज्ञा दें कि मैं एक लश्कर शामी फ़ौज का आप रज़ियल्लाहु अन्हु की रक्षा के लिए भेज दूं। उन लोगों की मौजूदगी में कोई व्यक्ति शरारत नहीं कर सकेगा। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया कि न मैं उस्मान की जान की रक्षा के लिए इस क़दर बोझ बैतुल माल पर डाल सकता हूँ और न यह पसंद करता हूँ कि मदीना के लोगों को फ़ौज रख कर तंगी में डालूं। इस पर हज़रत मुआविया ने निवेदन किया कि फिर तीसरी तजवीज़ यह है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की मौजूदगी में लोगों का साहस है कि यदि उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु न रहे तो उनमें से किसी को आगे खड़ा कर देंगे। उन लोगों को मुख़्तलिफ़ मुल्कों में फैला दें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया कि यह क्योंकर हो सकता है कि जिन लोगों को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जमा किया है मैं उनको अस्त-व्यस्त कर दूं, फैला दूं। इस पर मुआविया रो पड़े और निवेदन किया कि यदि इन उपायों में से जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु की रक्षा के लिए मैंने पेश किए हैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु कोई भी क़बूल नहीं करते तो इतना तो कीजीए कि लोगों में यह ऐलान कर दें कि यदि मेरी जान को कोई नुक़्सान पहुंचा तो मुआविया को मेरे बदले का हक़ होगा। शायद लोग इस से भय खा कर शरारत से बाज़ रहें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया कि मुआविया जो होना है हो कर रहेगा, मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि आपकी तबीयत सख़्त है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुआविया को कहा कि आपकी तबीयत सख़्त है ऐसा न हो कि आप मुस्लमानों पर सख़्ती करें। इस पर हज़रत मुआविया रोते हुए आप के पास से उठे और कहा कि मैं समझता हूँ कि शायद यह आख़िरी मुलाक़ात हो। और बाहर निकल कर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा। इस्लाम की निर्भरता आप लोगों पर है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अब बिल्कुल वृद्ध हो गए हैं और उपद्रव बढ़ रहा है। आप लोग उनका ख्याल रखें। यह कह कर मुआविया शाम की तरफ़ रवाना हो गए।

(उद्धरित इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 285-286)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का जो दृढ़ संकल्प और हिम्मत थी उसके बारे में वर्णन है, मुजाहिद ने वर्णन किया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने घर से घेराव करने वालों को झांक कर फ़रमाया कि हे मेरी क़ौम मुझे क़तल न करो क्योंकि मैं हाकिम-ए-वक़्त और तुम्हारा मुस्लमान भाई हूँ। बख़ुदा मैंने हमेशा सामर्थ्य के अनुसार इस्लाह करने की कोशिश की है चाहे मेरा स्टैंड दरुस्त था या मुझ से कोई गल्ती हुई। याद रखों यदि तुम ने मुझे क़तल किया तो तुम लोग कभी भी इकट्ठे नमाज़ न पढ़ सकोगे और न ही कभी इकट्ठे जिहाद कर सकोगे और न ही अम्वाल-ए-ग़नीमत की तुम में इन्साफ पर आधारित बाँट हो सकेगी। रावी कहते हैं कि जब घेराव करने वालों ने इन्कार किया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैं तुम्हें ख़ुदा की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम लोगों ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के वक़्त जबकि तुम सब इकट्ठे थे और सब दीन और हक़ पर क़ायम थे वे दुआ नहीं की थी जो तुमने की थी अर्थात ख़िलाफ़त के बारे में। फिर क्या अब तुम यह कहना चाहते हो कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी दुआएं क़बूल नहीं कीं या फिर यह कहना चाहते हो कि अल्लाह तआला को अब दीन की कोई पर्वा नहीं रही या फिर यह कहना चाहते हो कि मैंने इस चीज़ अर्थात ख़िलाफ़त को तलवार के ज़ोर से या क़बज़ा के द्वारा हासिल किया है और मुस्लमानों के मश्वरे से उसे हासिल नहीं किया या फिर तुम्हारा ख़्याल है कि मेरी ख़िलाफ़त के आरंभिक समय में अल्लाह तआला मेरे बारे

में वे बातें नहीं जानता था जिनका उसे बाद में पता चला। ये तो नहीं हो सकता। अल्लाह तआला सब जानता है। इस पर भी जब घेराव करने वालों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु की बात न मानी तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुआ की कि या अल्लाह ! तू उन्हें अच्छी तरह गिन ले और उन सबको चुन-चुन कर मारना और उन सब में से किसी एक को भी न छोड़ना। मुजाहिद कहते हैं कि इस उपद्रव में जिस जिस ने भी हिस्सा लिया अल्लाह तआला ने उन्हें हलाक कर दिया। (अल्तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद भाग तीन पृष्ठ 38, उस्मान बिन अफ्फान, दारुल अहया तुर्रास अरबी बैरूत 1996 ई.)

अबू लैला किंदी वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा जबकि आप कैद में थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक रोशन दान से झांक कर फ़रमाया हे लोगो! मुझे क़तल न करो और यदि मेरा क़सूर है तो मुझे तौबा का अवसर दो। अल्लाह की क़सम यदि तुम ने मुझे क़तल कर दिया तो फिर कभी इकट्ठे नमाज़ नहीं पढ़ सकोगे और कभी भी इकट्ठे हो कर दुश्मन का मुक़ाबला नहीं कर सकोगे और ज़रूर तुम आपस में मतभेद करोगे और इस तरह तुम उलझ कर रह जाओगे। रावी कहते हैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उंगलीयों में उंगलियां डाल कर बताया कि ऐसे। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया

وَ يٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ۔

(हूद : 90) और हे मेरी क़ौम! मेरी दुश्मनी तुम्हें कदापि ऐसी बात पर आमादा न करे कि तुम्हें भी वैसी ही मुसीबत पहुंचे जैसी नूह की क़ौम को और हूद की क़ौम को और सालेह की क़ौम को पहुंची थी और लूत की क़ौम भी तुम से कुछ दूर नहीं।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम की तरफ़ पैग़ाम भेजा। उन्होंने आकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से निवेदन किया कि ये सब कुछ जो हो रहा है इस में आप की क्या राय है? तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया लड़ाई से बचोगे। लड़ाई से बचोगे। क्योंकि यह बात तुम्हारे हक़ में बतौर दलील ज़्यादा मज़बूत होगी।

(अल्तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद भाग तीन पृष्ठ 39 उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल अहया तुर्रास बेरूत 1996 ई.)

मुहम्मद बिन सीरीन ने वर्णन किया कि हज़रत ज़ैद बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हो कर निवेदन किया कि ये अंसार दरवाज़े पर हाज़िर हैं और कह रहे हैं कि यदि आप पसंद फ़रमाएं तो हम दूसरी बार अल्लाह के अंसार बनने को तैयार हैं। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। नहीं, युद्ध कदापि नहीं करना। हज़रत अबू हुरेरह रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि यौमुलदार को मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास हाज़िर हो कर निवेदन किया। हे अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु! अब तो तलवार उठाना ही मुनासिब है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हे अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु! क्या तुम पसंद करोगे कि तुम समस्त लोगों को और मुझे भी क़तल कर दो। मैंने निवेदन किया नहीं। तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम यदि तुम ने एक व्यक्ति को भी क़तल किया तो मानों सब लोग क़तल हो गए। हज़रत अबू हुरेरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं फिर वापिस आ गया। उस लड़ाई में हिस्सा नहीं लिया। पहले यह वर्णन हो चुका है कि उन्होंने कहा था कि आज ही लड़ने का अवसर है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि मैंने घेराव के दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में निवेदन किया कि हे अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु! उन लोगों से जंग की जाए क्योंकि अल्लाह तआला ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए उनसे जंग करना वैध क़रार दिया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम! मैं उनसे कभी भी जंग नहीं करूँगा।

रावी कहते हैं कि इस पर वे लोग आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पास घर में घुस आए जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु रोज़े से थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने घर के दरवाज़े पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को निगरान निर्धारित फ़रमाया हुआ था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया था कि जो मेरी इताअत करना चाहता है वे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की इताअत करे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में निवेदन किया कि हे अमीरुल मोमेनीन यक़ीनन आप के पास घर में आप की रक्षा के लिए एक गिरोह है जिसे अल्लाह की ताईद-ओ-नुसरत हासिल है और वे इन घेराव करने वालों की निसबत संख्या में कम हैं। अत: आप मुझे बाग़ीयों से क़िताल की आज्ञा दें। तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ या फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह के नाम पर नसीहत करता हूँ कि कोई आदमी मेरी ख़ातिर अपना ख़ून न बहाए या मेरी ख़ातिर किसी और का ख़ून न बहाए। (अल्तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद, भाग तीन पृष्ठ 39 उस्मान बिन अफ्फ़ान,दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत से पूर्व के उपद्रव और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की घटना का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो वर्णन फ़रमाया है वह इस तरह है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि चूँकि बाग़ीयों को बज़ाहिर ग़लबा हासिल हो चुका था। उन्होंने आख़िरी उपाय के तौर पर फिर एक व्यक्ति को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ भेजा कि वह ख़िलाफ़त से विमुख हो जाएं क्योंकि वह समझते थे कि यदि ख़ुद दस्तबरदार हो जाऐंगे तो मुस्लमानों को उन्हें सज़ा देने का कोई हक़ और अवसर नहीं रहेगा अर्थात बाग़ीयों को फिर सज़ा देने का अवसर नहीं मिलेगा। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जो संदेश लेकर पहुंचा तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने तो जाहिलियत में भी बदियों से परहेज़ किया है और इस्लाम में भी इसके अहकाम को नहीं तोड़ा। मैं क्यों और किस जुर्म में इस ओहदे को छोड़ दूं जो ख़ुदा तआला ने मुझे दिया है? मैं तो उस क़मीज़ को कभी नहीं आतारुंगा जो ख़ुदा तआला ने मुझे पहनाई है। वह व्यक्ति यह उत्तर सुनकर वापिस आ गया और अपने साथीयों से उन शब्दों में आकर सम्बोधित हुआ कि ख़ुदा की क़सम! हम सख़्त मुसीबत में फंस गए हैं। ख़ुदा की क़सम मुस्लमानों की गिरिफ़त से उस्मान को क़तल करने के अतिरिक्त हम बच नहीं सकते क्योंकि इस अवस्था में हुकूमत अस्त व्यस्त हो जाएगी और इंतिज़ाम बिगड़ जाएगा और कोई पूछने वाला न होगा और उस का क़तल करना किसी तरह वैध नहीं अर्थात हल तो यही है लेकिन क़तल करना किसी तरह वैध नहीं। इस व्यक्ति के ये शब्द न सिर्फ उन लोगों की घबराहट पर दलालत करते हैं बल्कि इस बात पर भी दलालत करते हैं कि उस वक़्त तक भी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कोई ऐसी बात पैदा न होने दी थी जिसे ये लोग बतौर बहाने के इस्तिमाल कर सकें और उनके दिल महसूस करते थे कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का क़तल किसी अवस्था में वैध नहीं।

जब ये लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की क़तल की योजना बना रहे थे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम जो कुफ़्र की अवस्था में भी अपनी क़ौम में निहायत सम्मानित थे और जिनको यहूद अपना सरदार मानते थे और अद्वितीय होना जानते थे, तशरीफ़ लाए और दरवाज़े पर खड़े हो कर उन लोगों को नसीहत करनी शुरू की और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल से उनको मना फ़रमाया कि हे क़ौम ख़ुदा की तलवार को अपने ऊपर न खींचो। ख़ुदा की क़सम यदि तुमने तलवार खींची तो फिर उसे मयान में डालने का अवसर नहीं मिलेगा, फिर हमेशा मुस्लमानों में तलवार खिंची रहेगी। हमेशा मुस्लमानों में लड़ाई झगड़ा ही रहेगा। अक़्ल करो। आज तुम पर हुकूमत सिर्फ कोड़े के साथ की जाती है। उमूमन शरियत के हदूद में कोड़े की सज़ा दी जाती है और यदि तुमने उस व्यक्ति को क़तल कर दिया अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल कर दिया तो हुकूमत का काम बिना तलवार के नहीं चलेगा। अर्थात छोटे-छोटे अपराधियों के अपराधों पर भी लोगों को क़तल किया जाएगा। याद रखों कि इस वक़्त मदीना के संरक्षक फ़रिश्ते हैं। यदि तुम उस को क़तल कर दोगे तो फ़रिश्ते मदीना को छोड़ जाऐंगे। इस नसीहत से उन लोगों ने यह लाभ उठाया कि अब्दुल्लाह बिन सलाम सहाबी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को धुतकार दिया और उनको पहले दीन का ताना देकर कहा कि हे यहूदन के बेटे! तुझे इन कामों से क्या सम्बन्ध? अफ़सोस कि इन लोगों को यह तो याद रहा कि अब्दुल्लाह बिन सलाम यहूदन के बेटे थे लेकिन यह भूल गए कि आप रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर ईमान लाए और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु के ईमान लाने पर निहायत ख़ुशी का इज़हार किया और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हर एक मुसीबत और दुख में आप शरीक हुए और इसी तरह यह भी भूल गया कि उनका लीडर और उनको भड़काने वाला हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वसी क़रार देकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाबले पर खड़ा करने वाला अब्दुल्लाह बिन सबाह भी यहूदन का बेटा था बल्कि ख़ुद यहूदी था और

सिर्फ ज़ाहिर में इस्लाम का इज़हार कर रहा था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम तो ये बातें सुनके उन लोगों से मायूस हो कर चले गए और इधर उन लोगों ने यह देख कर कि दरवाज़े की तरफ़ से जा कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल करना मुश्किल है क्योंकि इस तरफ़ थोड़े बहुत जो लोग भी रोकने वाले मौजूद हैं वे मरने मारने पर तुले हुए हैं, यह फ़ैसला किया कि किसी पड़ोसी के घर की दीवार फाँद कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल कर दिया जाए। इसलिए इस इरादे से कुछ लोग एक पड़ोसी की दीवार फाँद कर आप रज़ियल्लाहु अन्हु के कमरे में घुस गए। जब अंदर घुसे तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन-ए-करीम पढ़ रहे थे और जब से कि घेराव हुआ था रात और दिन आप रज़ियल्लाहु अन्हु का यही कार्य था कि नमाज़ पढ़ते या क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करते और इसके सिवा और किसी काम की तरफ़ तवज्जा नहीं करते और उन दिनों में केवल आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक काम किया और वह यह कि उन लोगों के घरों में दाख़िल होने से पहले आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो आदमीयों को खज़ाने की रक्षा के लिए निर्धारित किया क्योंकि जैसा कि साबित है उस दिन रात को स्वप्न में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हु को नज़र आए, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ाब में नज़र आए और फ़रमाया कि उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु आज शाम को रोज़ा हमारे साथ खोलना। इस स्वप्न से आप रज़ियल्लाहु अन्हु को यक़ीन हो गया था कि आज मैं शहीद हो जाऊँगा। अत: आप रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी ज़िम्मेदारी ख़्याल करके दो आदमीयों को हुक्म दिया कि वे खज़ाने के दरवाज़े पर खड़े हो कर पहरा दें ताकि शोर-और-उपद्रव में कोई व्यक्ति खज़ाने को लूटने की कोशिश न करे। उद्देश्य जब ये लोग अंदर पहुंचे तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ते हुए पाया। इन आक्रमण करने वालों में मुहम्मद बिन अबी बकर भी थे और अपनी शक्ति के कारण जो उन लोगों पर उनको हासिल थी अपना फ़र्ज़ समझते थे, उनका ख़्याल था कि मैं हज़रत अबू बकर का बेटा हूँ तो मुझे फ़ौक़ियत हासिल है। अपना फ़र्ज़ समझते थे कि हर एक काम में आगे हूँ। इसलिए उन्होंने बढ़कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की दाढ़ी पकड़ ली और ज़ोर से झटका दिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके इस कर्म पर सिर्फ इस क़दर फ़रमाया कि हे मेरे भाई के बेटे! यदि तेरा बाप अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु इस वक़्त होते तो तू कभी ऐसा न करता। तुझे क्या हुआ। तू ख़ुदा के लिए मुझ पर नाराज़ है। क्या इसके सिवा तुझे मुझ पर कोई ग़ुस्सा है कि तुझ से मैं ने ख़ुदा के हुक़ूक़ अदा करवाए हैं? मैं यही कहता हूँ कि ख़ुदा के हुक़ूक़ अदा करो। इस पर मुहम्मद बिन अबी बकर शर्मिंदा हो कर वापिस लौट गए लेकिन दूसरे व्यक्ति वहीं रहे और चूँकि उस रात बस्रा के लश्कर की मदीना में दाख़िल होने की यक़ीनी ख़बर आ चुकी थी और ये अवसर उन लोगों के लिए आख़िरी अवसर था। उन लोगों ने फ़ैसला कर लिया कि बिना अपना काम किए वापिस नहीं लौटेंगे और उनमें से एक व्यक्ति आगे बढ़ा और एक लोहे की सीख़ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के सिर पर मारी और फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने जो क़ुरआन-ए-करीम रखा हुआ था उस को लात मार कर फेंक दिया। क़ुरआन-ए-करीम लुढ़क कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आ गया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के सिर पर से ख़ून के क़तरात गिर कर उस पर आ पड़े। क़ुरआन-ए-करीम की बे-अदबी तो किसी ने क्या करनी है परन्तु उन लोगों के तक़्वा और दयानत का पर्दा इस घटना से अच्छी तरह स्पष्ट हो गया। जिस आयत पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ून गिरा वह एक ज़बरदस्त पेशगोई थी जो अपने वक़्त पर जा कर इस शान से पूरी हुई कि सख़्त दिल से सख़्त दिल आदमी ने इस के ख़ूनी शब्दों की झलक को देखकर भय से अपनी आँखें बंद कर लीं। वह आयत यह थी। فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (सूरत बकर: :138) अल्लाह तआला ज़रूर उनसे तेरा बदला लेगा और वह बहुत सुनने वाला और जानने वाला है।

इस के बाद एक और व्यक्ति सूदान नामी आगे बढ़ा और उसने तलवार से आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला करना चाहा। पहला वार किया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने हाथ से उस को रोका और आप रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ कट गया। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला की क़सम! यह वह हाथ है जिस ने सबसे पहले क़ुरआन-ए-करीम लिखा था। इस के बाद फिर उसने दूसरा वार कर के आप रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल करना चाहा तो आपकी पत्नी नायला वहां आ गईं और अपने आपको बीच में खड़ा कर दिया परन्तु उस शक़ी ने एक महिला पर वार करने से भी पीछे नहीं हटा और वार कर दिया जिस से आप रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी की उंगलियां कट गईं और वे अलग हो गईं। फिर उसने एक वार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु को सख़्त ज़ख़मी कर दिया। इसके बाद इस शक़ी ने यह ख़्याल कर के कि अभी जान नहीं निकली, शायद बच जाएं उसी वक़्त जबकि ज़ख़मों के सदमों से आप बेहोश हो चुके थे और शिद्दत-ए-दर्द से तड़प रहे थे आप रज़ियल्लाहु अन्हु का गला पकड़ कर घोंटना शुरू किया और उस वक़्त तक आपका गला नहीं छोड़ा जब तक आप रज़ियल्लाहु अन्हु की रूह शरीर से निकल कर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत को लब्बैक कहते हुए इस संसार से निकल नहीं गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पहले हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी इस नज़्ज़ारे की हैबत से प्रभावित हो कर बोल नहीं सकीं लेकिन आख़िर उन्होंने आवाज़ दी और वे लोग जो दरवाज़े पर बैठे हुए थे अंदर की तरफ़ दौड़े परन्तु अब सहायता फ़ुज़ूल थी, जो कुछ होना था वह हो चुका था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के एक आज़ाद करदा ग़ुलाम ने सूदान के हाथ में खून में डूबा हुई तलवार देखी जिस ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया था तो उस से न रहा गया और उसने आगे बढ़ कर उस व्यक्ति का तलवार से सिर काट दिया। इस पर उस के साथीयों में से एक व्यक्ति ने उस को क़तल कर दिया।

अब इस्लामी हुकूमत का तख़्त ख़लीफ़ा से ख़ाली हो गया। मदीना वालों ने मज़ीद कोशिश फ़ुज़ूल समझी और हर एक अपने अपने घर जा कर बैठ गया। इन लोगों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को मार कर घर पर अत्यधिक अत्याचार करना शुरू किया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी ने चाहा कि उस जगह से हट जाएँ तो उसके लौटते वक़्त उनमें से एक कम्बख़्त ने अपने साथीयों से उनके सम्बन्ध में निहायत ग़लीज़ अलफ़ाज़ में टिप्पणी की। बेशक एक हयादार आदमी के लिए चाहे वह किसी मज़हब का अनुसरण करने वाला क्यों न हो इस बात का विश्वास करना भी मुश्किल है कि ऐसे वक़्त में जबकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निहायत साबिक़ क़दीमी सहाबी, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामाद, समस्त इस्लामी देशों के बादशाह और फिर ख़लीफ़-ए-वक़्त को ये लोग अभी अभी मार कर फ़ारिग़ हुए थे ऐसे गंदे ख़्यालात का उन लोगों ने इज़हार किया हो लेकिन उन लोगों की बेहयाई ऐसी बढ़ी हुई थी कि किसी किस्म की बदआमाली भी उनसे बची न थी। ये लोग किसी नेक मुद्दा को लेकर खड़े नहीं हुए थे न उनकी जमाअत नेक आदमीयों की जमाअत थी। उनमें से कुछ अब्दुल्लाह बिन सबह यहूदी के फ़रेब-ख़ुर्दा और उसकी अजीब-ओ-ग़रीब मुख़ालिफ़ इस्लाम की शिक्षा के दिलदादा थे। कुछ हद से बढ़ी हुई सोशलिज्म बल्कि बोलशविज्म पर मोहित थे। कुछ अपराधी थे जो अपने पुराने द्वेष को निकालना चाहते थे। कुछ लुटेरे और डाकू थे जो इस उपद्रव पर अपने प्रगति के मार्ग देखते थे। अत: उनकी बेहयाई क़ाबिल ताज्जुब नहीं है बल्कि ये लोग यदि ऐसी हरकात नहीं करते तब ताज्जुब का मुक़ाम था। जब ये लोग लूट मार कर रहे थे तो एक और आज़ाद करदा ग़ुलाम से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर वालों की चीख़-ओ-पुकार सुनकर नहीं रहा गया और उसने हमला करके उस व्यक्ति को क़तल कर दिया जिसने पहले ग़ुलाम को मारा था। इस पर उन लोगों ने उसे भी क़तल कर दिया और महिलाओं के शरीर पर से भी ज़ेवर उतार लिए और हंसी ठट्ठा करते हुए घर से निकल गए।

(उद्धरित इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 327 से 331)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु उन वध करने वालों की बदतहज़ीबी का ओर वर्णन करते हुए एक जगह फ़रमाते हैं कि ख़ुद उन्होंने क्या-किया हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया और जब ख़ून में तड़प रहे थे तो क़ातिल उनकी बीवी, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी के सम्बन्ध में बेहूदा बकवास कर रहे थे, शरीर के बारे में बाते कर रहे थे। फिर इस से भी नीचता का उन्होंने काम किया अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी पर ही नहीं बल्कि इस से भी आगे बढ़े और हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के सम्बन्ध में भी बातें कीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ये बातें सुनके मैं ये कहता हूँ कि मुझे ख़ुदा तआला ने बहुत बड़ा स्थान दिया है और मैं इस पर गर्व करता हूँ लेकिन मेरा दिल चाहता है कि काश मैं उस वक़्त होता और अब न होता तो मैं उन लोगों के टुकड़े-टुकड़े कर देता। उन लोगों की इंतिहा क्या थी? हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में

जैसा कि मैं ने कहा फ़रमाते हैं कि उन्होंने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को बे पर्दा किया और देख कर कहा था कि यह तो नौजवान है। (उद्धरित रिपोर्ट मुशावेरत 12, 11 अप्रैल 1925 ई. पृष्ठ 32-33)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर भी टिप्पणियाँ करते रहे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ जो वाक़ियात पेश आए उनसे भी यही मालूम होता है कि वे इन बातों से कभी भयभीत नहीं हुए अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु इस बात से कभी भयभीत नहीं हुए कि मुझ से क्या व्यवहार होगा। तारीख़ से साबित है कि जब बाग़ीयों ने मदीना पर क़बज़ा कर लिया तो वे नमाज़ से पहले समस्त मस्जिद में फैल जाते और मदीना वालों को एक दूसरे से जुदा-जुदा रखते ताकि वे इकट्ठे हो कर उनका मुक़ाबला न कर सकें परन्तु इस विद्रोह के अतिरिक्त और फ़ित्ना-अंगेज़ी और फ़साद के हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ने के लिए अकेले मस्जिद में तशरीफ़ लाते और ज़रा भी भय महसूस नहीं करते और उस वक़्त तक बराबर आते रहे जब तक लोगों ने आप को मना नहीं कर दिया। जब उपद्रव बहुत बढ़ गया और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर पर मुफसिदों ने हमला कर दिया तो उस के अतिरिक्त कि आप सहाबा का अपने मकान के इर्द-गिर्द पहरा लगवाते आपने उन्हें क़सम देकर कहा कि वे आपकी रक्षा कर के अपनी जानों को ख़तरे में न डालें और अपने घरों को चले जाएं। क्या शहादत से डरने वाला आदमी भी ऐसा ही किया करता है और वे लोगों से कहा करता है कि मेरी फ़िक्र न करो बल्कि अपने अपने घरों को चले जाओ। साबित है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहादत से कोई भय नहीं था। फिर इस बात का कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु वाक़ियात से कुछ भी भयभीत नहीं थे एक और ज़बरदस्त सबूत यह है जैसा कि ख़ुतबे के शुरू में वर्णन हुआ था कि इस उपद्रव के दौरान एक दफ़ा हज़रत मुआविया हज के लिए आए। जब वे शाम को वापिस जाने लगे तो मदीना में वे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु रज़ियल्लाहु अन्हु से मिले और निवेदन किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे साथ शाम चलें वहां आप इन फ़ित्नों से महफ़ूज़ रहेंगे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मुआविया मैं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट रहने पर किसी चीज़ को प्राथमिकता नहीं दे सकता। उन्होंने निवेदन किया कि यदि आपको यह बात स्वीकार नहीं तो मैं शामी सिपाहीयों का एक लश्कर आपकी रक्षा के लिए भेज देता हूँ। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अपनी रक्षा के लिए एक लश्कर रख कर मुस्लमानों के रिज़्क़ में कमी नहीं करना चाहता। हज़रत मुआविया ने निवेदन किया कि अमीरुल मोमेनीन लोग आप को धोखे से क़तल कर देंगे या संभव है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ वे जंग हो जाएं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मुझे इस की पर्वा नहीं। मेरे लिए मेरा ख़ुदा काफ़ी है। आख़िर उन्होंने कहा यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हु और कुछ मंज़ूर नहीं करते तो इतना करें कि शरारती लोगों को कुछ बड़े सहाबा के सम्बन्ध में घमंड है और वे ख़्याल करते हैं कि आपके बाद वे काम सँभाल लेंगे। इसलिए वे उनका नाम ले-ले कर लोगों को धोखा देते हैं। आप इन सबको मदीना से विदा कर दें और बैरूनी मुल्कों में फैला दें। इससे उपद्रवियों के इरादे टूट जाऐंगे और वे ख़्याल करेंगे कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु से विवाद कर के उन्होंने क्या लेना है जबकि मदीना में कोई और काम को सँभालने वाला ही नहीं है। परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह बात भी नहीं मानी, पहले वर्णन हो चुका है, और कहा यह किस तरह हो सकता है कि जिन लोगों को रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जमा किया है मैं उन्हें देश निकाला कर दूं। हज़रत मुआविया यह सुन कर रो पड़े और उन्होंने निवेदन किया कि यदि आप और कुछ नहीं करते तो इतना ही ऐलान कर दें कि मेरे ख़ून का बदला मुआविया लेगा। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मुआविया तुम्हारी तबीयत तेज़ है। मैं डरता हूँ कि मुस्लमानों पर तुम कहीं सख़्ती न करो। इसलिए मैं यह ऐलान भी नहीं कर सकता। अब कहने को तो यह कहा जाता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु दिल के कमज़ोर थे परन्तु तुम ख़ुद ही बताओ कि इस किस्म का साहस कितने लोग दिखा सकते हैं ? और क्या इन वाक़ियात के होते हुए कहा जा सकता है कि उनके दिल में कुछ भी भय था अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में कोई भय था। यदि भय होता तो वे कहते कि तुम अपनी फ़ौज का एक दस्ता मेरी रक्षा के लिए भिजवा दो। उन्हें वेतन मैं दिला दूँगा और यदि भय होता तो आप ऐलान कर देते यदि मुझ पर किसी ने हाथ उठाया तो वे सुन ले कि मेरा बदला मुआविया लेगा परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस के अतिरिक्त कोई उत्तर नहीं दिया कि मुआविया तुम्हारी तबीयत तेज़ है। मैं डरता हूँ कि यदि मैं ने तुमको यह अधिकार दे दिया तो तुम मुस्लमानों पर सख़्ती करोगे। फिर जब आख़िर में दुश्मनों ने दीवार फाँद कर आप पर हमला किया तो बिना किसी डर और भय के इज़हार के आप क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करते रहे यहां तक कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक बेटा, अल्लाह तआला उस पर रहम करे, आगे बढ़ा और उसने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की दाढ़ी पकड़ के उसे ज़ोर से झटका दिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस की तरफ़ आँख उठाई और फ़रमाया मेरे भाई बेटे! यदि तेरा बाप उस वक़्त होता तो तू कभी ऐसा न करता। यह सुनते ही उसका सिर से लेकर पैर तक शरीर काँप गया और शर्मिंदा हो कर वापिस लौट गया। इसके बाद एक और व्यक्ति आगे बढ़ा और उसने एक लोहे की सीख़ जैसा कि वर्णन हो चुका है हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के सिर पर मारी और आगे क़ुरआन जो पड़ा हुआ था उसको पांव से ठोकर मारी। अलग फेंक दिया। वह हटा तो एक और व्यक्ति आगे आया और उसने तलवार से आपको शहीद कर दिया। इन वाक़ियात को देख कर कौन कह सकता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु इन वाक़ियात से भयभीत थे।

(उद्धरित ख़िलाफ़त-ए-राशिदा, अनवारुल उलूम भाग 15 पृष्ठ 536-537)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम आए और उसी रंग में आए जिस रंग में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और दूसरे नबी आए हुए थे और आप के बाद भी इसी रंग में सिलसिला-ए-ख़िलाफ़त शुरू हुआ जिस तरह पहले नबियों के बाद ख़िलाफ़त का सिलसिला क़ायम हुआ। यदि हम अक़ल के साथ देखें और इसकी हक़ीक़त को पहचानने की कोशिश करें तो हमें मालूम होगा कि यह एक महान सिलसिला है। अर्थात ख़िलाफ़त का सिलसिला एक महान सिलसिला है बल्कि मैं कहता हूँ कि यदि दस हज़ार नसलें भी उसके क़ियाम के लिए क़ुर्बान कर दी जाएं तो कोई हैसियत नहीं रखतीं। मैं दूसरों के सम्बन्ध में तो नहीं जानता परन्तु कम से कम अपने सम्बन्ध में जानता हूँ कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने की तारीख़ पढ़ने के बाद जब मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर पड़ी हुई मुसीबतों पर नज़र करता हूँ और दूसरी तरफ़ उस नूर और रूहानियत को देखता हूँ जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आ कर उनमें पैदा की तो मैं कहता हूँ कि यदि दुनिया में मेरी दस हज़ार नसलें पैदा होने वाली होतीं और वे सारी की सारी एक काल में जमा कर के क़ुर्बान कर दी जातीं ता वह उपद्रव टल सकता तो मैं समझता हूँ कि यह जूं देकर हाथी ख़रीदने का सौदा है अर्थात बहुत छोटी सी चीज़ देकर,जूं तो एक बड़ा मामूली सा कीड़ा है वह दे कर हाथी ख़रीदने के सौदे से भी यह सस्ता है। दरहक़ीक़त हमें किसी चीज़ की क़ीमत का पता बाद में लगता है।

(उद्धरित नबुव्वत और ख़िलाफ़त अपने वक़्त पर ज़हूर पज़ीर हो जाती है, अनवारुल उलूम भाग 18 पृष्ठ 246)

बाद में पता लगता है कि असल क़ीमत क्या है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद पता लगा कि ख़िलाफ़त की एहमीयत क्या है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद समस्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की नज़रें मसनद-ए-ख़िलाफ़त पर बैठने के लिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर पड़ी और आप बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के मश्वरे से इस काम के लिए चुने गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामाद थे और यह कि एक के बाद एक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दो पुत्रियाँ आप रज़ियल्लाहु अन्हु से ब्याही गईं और जब दूसरी लड़की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़ौत हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यदि मेरी कोई और बेटी होती तो मैं उसे भी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से ब्याह देता। इस से मालूम होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़र में आप को विशेष स्थान प्राप्त था। आप अमक्का वालों की नज़र में निहायत विशेष हैसियत रखते और उस वक़्त मुल्क़-ए-अरब के हालात के अनुसार मालदार आदमी थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार करने के बाद जिन विशेष-विशेष लोगों को तब्लीग़ इस्लाम के लिए चुना उनमें एक हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का अनुमान ग़लत नहीं गया बल्कि थोड़े दिनों की तब्लीग़ से ही आपने "हज़रत

उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने'' इस्लाम क़बूल कर लिया और इस तरह لسَّابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ में अर्थात इस्लाम में दाख़िल होने वाले इस गिरोह में शामिल हुए जिन की क़ुरआन-ए-करीम निहायत प्रशंसनीय शब्दों में प्रशंसा फ़रमाता है। अरब में उन्हें जिस क़दर सम्मान हासिल था उसका कुछ अनुमान इस घटना से लग सकता है कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक स्वप्न के आधार पर मक्का तशरीफ़ लाए और मक्का वालों ने द्वेष से अंधे हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उमरा करने की आज्ञा नहीं दी तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उपाय फ़रमाया कि किसी विशेष विश्वसनीय व्यक्ति को मक्का वालों के पास इस बात पर बात करने के लिए भेजा जाए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का उसके लिए चुनाव किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मैं तो जाने को तैयार हूँ परन्तु मक्का में यदि कोई व्यक्ति उनसे बात चीत कर सकता है तो वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु है क्योंकि वह उन लोगों की नज़र में विशेष सम्मन रखता है। अत: यदि कोई दूसरा व्यक्ति गया तो उस पर कामयाबी की इतनी उम्मीद नहीं हो सकती जितनी कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर है। और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की इस बात को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी दरुस्त समझा और उन्ही को इस काम के लिए भेजा। इस घटना से मालूम होता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु कुफ़्फ़ार में भी विशेष सम्मान की नज़र से देखे जाते थे।

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हु का बहुत सम्मन फ़रमाते थे। एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेटे हुए थे कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसी तरह लेटे रहे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए तब भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसी तरह लेटे रहे। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने झट अपने कपड़े समेट कर ठीक कर लिए और फ़रमाया हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की तबीयत में लज्जा बहुत है। इसलिए मैं उसके एहसासात का ख़्याल करके ऐसा करता हूँ। "आप रज़ियल्लाहु अन्हु उन कुछ आदमीयों में से हैं'' अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उन कुछ आदमीयों में से एक हैं'' जिन्हों ने इस्लाम के क़बूल करने से पहले भी कभी शराब को मुँह नहीं लगाया और व्यभिचार के नज़दीक नहीं गए और यह ऐसी खूबियां हैं जो अरब के मुल्क में जहां शराब का पीना गर्व और व्यभिचार एक प्रतिदिन का कार्य समझा जाता था इस्लाम से पहले कुछ गिनती के आदमीयों से ज़्यादा लोगों में यह विशेषता नहीं पाई जाती थीं। उद्देश्य आप रज़ियल्लाहु अन्हु कोई मामूली आदमी नहीं थे। निहायत आला दर्जा के आचरण आप रज़ियल्लाहु अन्हु में पाए जाते थे। दुनियावी सम्मान के लिहाज़ से आप रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत प्रसिद्ध थे। इस्लाम में सबक़त रखते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर निहायत ख़ुश थे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप को उन छ: आदमीयों में से एक क़रार दिया जिन्हों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के वक़्त तक आप रज़ियल्लाहु अन्हु की आला दर्जा की ख़ुशनूदी को हासिल किया करते रहे और फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु आशरा मुबशरा में से एक व्यक्ति हैं अर्थात उन दस आदमीयों में से एक हैं जिनकी निसबत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जन्नत की खुशखबरी दी थी।''

(इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 251-253)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के दिन के बारे में कहा जाता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु सतरह या अठारह ज़ुल हज्जा 35 हिज्री को जुमा के दिन शहीद किए गए। अबू उस्मान नह्दी के अनुसार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत तश्रीक के दिनों के बीच में हुई अर्थात बारह ज़ुल हज्जा को जबकि इब्ने इसहाक़ के अनुसार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की घटना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की घटना के ग्यारह वर्ष, ग्यारह माह और बाईस दिन के बाद हुई जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के पच्चीस वर्ष बाद हुई।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मारेफ़तिल असहाब भाग 3 पृष्ठ 159 उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

एक दूसरी रिवायत में है कि अब्दुल्लाह बिन उमर बिन उस्मान वर्णन करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने जुमा के दिन 18 ज़ुल हज्जा 36 हिज्री में नमाज़-ए-अस्र के बाद बयासी वर्ष की आयु में शहादत पाई। आप रज़ियल्लाहु अन्हु शहादत के वक़्त रोज़े में थे। अबू मशअर के नज़दीक शहादत के वक़्त आप की आयु 75 वर्ष थी। (अल्तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद, भाग तीन पृष्ठ 43 वर्णन उस्मान बिन अफ्फ़ान,दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की तजहीज़-और-तकफ़ीन के बारे में वर्णन है कि नियार बिन मुकरम ने कहा कि हफ्ते की रात मग़रिब और इशा के दरमयान हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पार्थिव शरीर को हम चार व्यक्तियों ने उठाया अर्थात मैं और जुबैर बिन मुतअम और हकीम बिन हिज़ाम और अबू जुहम बिन हुज़ैफ़ा। हज़रत जुबैर बिन मुतअम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। मुआविया ने इस बात की तसदीक़ की। यही चार आप रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र में उतरे थे। एक रिवायत में है कि हज़रत जुबैर बिन मुतअम ने सोला अफ़राद के साथ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। अल्लामा इब्ने सआद का कथन है कि पहली रिवायत ज़्यादा सही है अर्थात चार आदमीयों वाली जिस में वर्णन है कि चार अफ़राद ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ जनाज़ा अदा की थी। (अल्तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद, भाग तीन पृष्ठ 43 वर्णन उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत 1996ई.)

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन उस्मान वर्णन करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को हफ़्ते की रात मग़रिब और इशा के दरमयान हाश्शे कोकब में दफ़न किया गया। रबी बिन मालिक अपने पिता से रिवायत करते हैं कि लोगों की यह इच्छा थी कि वे अपने मर्दों को हाश्शे कोकब में दफ़न किया करें। हश छोटे बाग़ को कहते हैं और कौकब एक अंसारी का नाम था जिस का यह बाग़ था। यह जन्नतुल बक़ी के बिल्कुल क़रीब ही एक जगह थी। हज़रत उस्मान बिन अफ्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु कहा करते थे कि जल्द एक नैक मर्द वफ़ात पाएगा और उसे वहां दफ़न किया जाएगा अर्थात हाश्शे कोकब में दफ़न किया जाएगा और लोग उसकी पैरवी करेंगे। मालिक बिन अबू आमिर वर्णन करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पहले व्यक्ति थे जो वहां दफ़न किए गए।

(अल्तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद भाग तीन पृष्ठ 42-43 वर्णन उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत, 1996 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की तदफ़ीन के हवाले से एक रिवायत यह भी मिलती है कि उपद्रवियों और बाग़ीयों ने तीन दिन तक आप रज़ियल्लाहु अन्हु की तदफ़ीन नहीं होने दी। इसलिए तारीख़ तिब्री में वर्णित है कि अबू बशीर अबदी ने वर्णन किया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का पार्थिव शरीर तीन दिन तक बिना कफ़न और दफ़न किए बिना रहा और उनकी तदफ़ीन नहीं होने दी गई। फिर हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत जुबैर बिन मुतअम रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की तदफ़ीन के बारे में बात की कि वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर वालों से उनकी तदफ़ीन की आज्ञा तलब करें। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐसा किया और उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को आज्ञा दे दी। जब उन लोगों ने अर्थात मुफ़सदीन ने यह बात सुनी तो वे पत्थर लेकर रास्ते में बैठ गए और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के जनाज़े के साथ उनके अहल में से कुछ लोग साथ निकले। वे लोग मदीना में एक अहाते में जाना चाहते थे जिसे हश्शे कोकब कहते थे। यहूद वहां अपने मुर्दे दफ़न किया करते थे। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा बाहर आया तो उन लोगों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु की चारपाई पर पत्थर मारे और आप को गिराने की कोशिश की। जब यह बात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु तक पहुंची तो उन्होंने उन लोगों की तरफ़ पैग़ाम भिजवाया और कहा कि वे ऐसा करने से रुक जाएं। इस पर वे लोग रुक गए। जनाज़ा चला यहां तक कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को हश्शे कोकब में दफ़न कर दिया गया। जब अमीर मुआविया लोगों पर ग़ालिब आ गए तो उन्होंने हुक्म दिया कि इस अहाते की दीवार को गिरा दिया जाए यहां तक कि वे बक़ीअ अर्थात क़ब्रिस्तान जो था उस में शामिल हो जाए और उन्हों ने लोगों को हुक्म दिया कि वे अपने वफ़ात पाने वालों को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र के इर्द-गिर्द दफ़न करें यहां तक कि वे अहाता मुस्लमानों की क़ब्रों के साथ जा मिला।

(अलतिबरी भाग 2 पृष्ठ 687 वर्णन الخبر عن الموضع الذى دفن فيه عثمان... दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.)

कुछ तारीख़ की कुतुब में यह भी वर्णन है कि इस जगह को हज़रत उस्मान

रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुद ख़रीद कर जन्नतुल बक़ी में शामिल कर दिया था। (उसोदुल ग़ाबा फ़ी मरेफातिल सहाबा भाग 3 पृष्ठ 586 उस्मान बिन अफ़्फ़ान, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

बहरहाल अभी शायद कुछ वर्णन और चलेगा। थोड़ा सा रह गया है। आगे इन शा-अल्लाह।

इस वक़्त में, आज कुछ जनाज़े भी पढ़ाने हैं। उनका वर्णन कर देता हूँ। पहला वर्णन मौलवी मुहम्मद इदरीस तीरू साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला एयवरी कोस्ट का जो 27, 28 फ़रवरी के मध्य की रात अर्थात थोड़े बीमार होने के बाद वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। आप एयवरी कोस्ट के शहरी थे और इबतिदाई तालीम के बाद यह बुर्कीना फासों चले गए। सांसारिक तालीम के साथ अरबी भाषा में महारत हासिल की। साठ की दहाई में उन्होंने अहमादीयत क़बूल की। 1983 ई. में अपनी दिल्ली ख़ुशी के साथ पाकिस्तान गए जहां जामिआ अहमदिया रब्वा में तालीम हासिल करने के बाद एयवरी कोस्ट में बतौर मुबल्लिग़ ख़िदमत सिलसिला की तौफ़ीक़ पाई। घाना और फिर बुर्कीना फासो में ख़िदमत बजा लाने बाद सितम्बर 2007 ई. से पुन: एयवरी कोस्ट में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। मरहूम मूसी थे।

पाकिस्तान जाने की घटना भी जो उन्होंने वर्णन की वह भी बड़ा दिलचस्प है। उनके पास जो जमा पूँजी थी उन्होंने इस से जहाज़ का टिकट ख़रीदा और पाकिस्तान पहुंच कर किसी को इत्तिला नहीं की। न जमाअत एयवरी कोस्ट को इत्तिला, न पाकिस्तान में किसी को इत्तिला। वहां पहुंचे। एयरपोर्ट से बाहर निकले। बड़े फ़िक्रमंद थे तो देखा कि एक व्यक्ति है। उसके पास गए बल्कि वह व्यक्ति ख़ुद ही उनके पास आया और पूछा कि आप कहाँ से आए हैं? कहाँ जाना है? इंग्लिश उनको आती नहीं थी। उर्दू भी नहीं आती थी। अरबी के एक-आध फ़िक़रे में बात हुई तो बहरहाल फिर वह अहमदिया हाल में ले आया तो उस व्यक्ति ने बताया कि मेरी पत्नी ने रात ख़ाब देखी थी कि एक ग़ैर मुल्की मेहमान आ रहा है और आप उस को लेकर आए हैं। वह कहते थे इस वजह से मैं एयरपोर्ट आ गया था और जब मैंने देखा कि जहाज़ पर से सिर्फ आप ही उतरे हैं और परेशान बाहर खड़े हैं तो मैं समझा यही वह मेहमान हैं जो मेरी पत्नी को ख़ाब में नज़र आए थे। इसलिए अल्लाह तआला ने इस तरह उनका इंतिज़ाम कर दिया और इस घटना को कई बार सुनाते थे और कहा करते थे कि मैं दुआ सारे रास्ते में भी करता रहा और उस वक़्त भी और दुआ का यह चमत्कार है कि अल्लाह तआला ने मेरा इंतिज़ाम कर दिया और एक रात पहले इस अहमदी व्यक्ति की पत्नी को भी कराची में ख़ाब दिखा दी कि मैं आ रहा हूँ। इस तरह उनका इंतिज़ाम हो गया और फिर वह अहमदिया हाल पहुंचे। इसके बाद रब्वा पहुंचे। बहरहाल बड़े नेक दुआ करने वाले बुज़ुर्ग थे।

क़य्यूम पाशा साहिब जो मिशनरी इंचार्ज एयवरी कोस्ट हैं कहते हैं कि बुर्कीना फ़ासो में भी हमने तीन वर्ष इकट्ठे काम किया फिर एयवरी कोस्ट में भी इकट्ठे काम का अवसर मिला। जमाअत से और मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम से बेपनाह मुहब्बत रखने वाले थे। बहुत फ़िदाई थे। इबादत गुज़ार थे। दयालु इंसान थे। लोगों की बहुत सहायता करते थे। बच्चों को अपने घर में रख कर उनकी तालीम और दूसरे अख़राजात उठाए। दीन की तब्लीग़ में हमेशा पेश-पेश रहते थे। मेहमान-नवाज़ी भी उनका विशेष कार्य, उनकी पहचान थी। तब्लीग़ करने का अंदाज़ भी बहुत अच्छा था और बहुत ज्ञान भी था। लोग उनका अंदाज़ पसंद करते थे। जहां तब्लीग़ के लिए बैठते लोग उनके इर्द-गिर्द जमा हो जाते। तहज्जुद गुज़ार, सच्ची ख़्वाबें देखने वाले व्यक्ति थे। बेनफ़्स वजूद थे।

सिद्दीक़ जियालो साहिब मुअल्लिम एयवरी कोस्ट हैं कहते हैं मौलवी इदरीस तीरू साहिब जमाअत और ख़िलाफ़त के दीवाने थे जो हर वक़्त जमाअत की ख़ातिर हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहते थे। मैंने एयवरी कोस्ट में उनसे ज़्यादा जमाअत से मुहब्बत करने वाला कोई व्यक्ति नहीं देखा। जब उनसे पूछा जाता कि आपकी नेशनेल्टी क्या है तो उत्तर दिया करते थे न मैं अफ़्रीकन हूँ, न मैं यूरोपीयन हूँ। न कोई और मेरी नेशनेल्टी है। मेरी पहचान मेरी क़ौम अहमदीयत है। एयवरी कोस्ट के अव्वलीन अहमदियों में से थे।

बासित साहिब मुबल्लिग़ एयवरी कोस्ट लिखते हैं। हमेशा ख़िलाफ़त से वाबस्ता रहने की तलक़ीन करते और कहा करते थे कि मैंने जो भी फ़ैज़ पाया ख़िलाफ़त की बदौलत ही पाया। इलमी लिहाज़ से भी बहुत बलंद पाया इन्सान जूला (jula) जो उनकी मादरी भाषा थी उसके अतिरिक्त फ्रेंच, अरबी, उर्दू पर भी काफ़ी प्रतिभा हासिल थी। पढ़ने लिखने के माहिर और शास्त्रार्थ-कर्ता थे। वहाबी उल्मा के साथ शास्त्रार्थ किया करते थे। एक अहमदी भाई अब्दुल्लाह साहिब ने सान पेद्रो (san pedro) में होने वाले एक शास्त्रार्थ की घटना सुनाई कि वहाबियों की मस्जिद में पहुंचे और शास्त्रार्थ के लिए तै हुआ कि सिर्फ क़ुरआन-ए-करीम से दलायल दिए जाऐंगे। सुबह आठ से ले के शाम छ: बजे तक मुसलसल शास्त्रार्थ जारी रहा जिस के दौरान सिर्फ़ नमाज़ का वक़्फ़ा किया गया। इस दौरान मौलवी-साहब ने ऐसे दलायल मुख़ालिफ़ मौलवी-साहब को दिए जिसका कोई रद्द पेश नहीं कर सका और अपनी शिकस्त स्वीकार की और अहमदीयत को इस शास्त्रार्थ में फ़त्हा नसीब हुई। फिर लिखते हैं कि उनकी हैसियत लाइब्रेरी जैसी थी। तब्लीग़ के लिए मैदान में आप को हवालाजात ज़बानी याद होते थे। फिर वे चाहे उर्दू में हों या अरबी में या फ्रेंच में, किसी ज़बान में भी हवाला हो फ़ौरन सुना दिया करते थे। दुआ को हमेशा अपना हर्बा बनाते थे और सब को दुआ करने की नसीहत भी किया करते थे।

उनकी एक पत्नी और चार बेटियां और एक बेटा है। अल्लाह तआला इन बच्चों को भी निज़ाम के सम्बन्ध में आगे करें और उनकी इच्छा के अनुसार उनको निज़ाम का हिस्सा बनाए। कुछ इतना ज़्यादा ताल्लुक़ नहीं है लेकिन अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए। अल्लाह तआला उनसे भी मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

दूसरा जो जनाज़ा है वह आदरणीया अमीना कायरे (kaire) साहिबा का है जो मुहम्मद अली कायरे साहिब अमीर और मिशनरी इंचार्ज युगांडा की पत्नी थीं। 20 फ़रवरी को वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। एक विनम्र, ज्ञानी और बहादुर महिला थीं। कायरे साहिब ने बताया कि मेरे कामयाब मुरब्बी होने की एक विशेष वजह मेरी पत्नी हैं। युगांडन हैं लेकिन बहुत इख़लास और वफ़ा रखने वाली। कहते हैं जब हमारी शादी हुई तो उनकी उमर उन्नीस वर्ष थी। आप को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना नहीं आता था परन्तु चूँकि आप को उसके लिए जोश और लगन थी इसलिए आपने क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना सीख लिया और इसके अर्थों पर ग़ौर करने की कोशिश करती थीं। मुख़्तलिफ़ हैसियतों से जमाअत की ख़िदमत करने की उनको तौफ़ीक़ मिली और तब्लीग़ का उनको बड़ा शोक था। 2005 ई. में उनको सदर लजना निर्धारित किया गया। एक दो बार उनको जेल भी हुई किसी ग़लत किस्म के जुर्म में। अर्थात उनकी ग़लती नहीं थी ज़ालिमाना तौर पर उनको जेल भी जाना पड़ा। तर्बीयत के विषय में एक उदाहरण थीं। आप बड़ी बहादुरी से ग़ैर अज़ जमाअत के आरोपों के उत्तर देती थीं। आपकी बेटी बताती हैं कि आप हर हालत में चाहे सेहत मंद हों या बीमार हमेशा नमाज़ की पाबंद रहती थीं। हर वर्ष रमज़ान के मिहीने में एतिकाफ़ बैठती थीं। ज़ाती एतराज़ात को बर्दाश्त करती थीं परन्तु मज़हब के बारे में कुछ बर्दाश्त नहीं करती थीं। आपको पोलीटिक्ल फोरम पर मुख़्तलिफ़ लेवल पर भी काम करने की तौफ़ीक़ मिली। मरहूमा मूसिया थीं पीछे रहने वालों में पति के अतिरिक्त छ: बच्चे शामिल हैं जिनमें से दो बेटे मिशनरी हैं।

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

अगला वर्णन आदरणीय लुइ कज़क साहिब शाम का है। 10 दिसंबर को 48 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई।इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन मरहूम के ख़ानदान में अहमदीयत 1928 ई. में आई जब हज़रत मौलाना जलालुद्दीन शम्स साहिब दमिशक़ से हैफा तशरीफ़ ले गए थे। हैफा के पहले अहमदी आदरणीय रुश्दी बाकेर बुस्ती साहिब की तब्लीग़ से मरहूम के पड़दादा अली सालेह काज़िक साहिब और उनके भाई मुहम्मद कज़क साहिब (पिता ताहा कज़क साहिब साबिक़ सदर जमाअत अरदन) ने फ़ैमिली के साथ बैअत की। बाद में इसराईल के क़ियाम पर उनका ख़ानदान दमिशक़ हिज्रत कर गया। मरहूम बहुत मुख़लिस अहमदी थे। नमाज़ क़ुरआन के पाबंद, चंदों में बाक़ायदा, ख़िलाफ़त से मुहब्बत करने वाले, जमाअती ख़िदमत में पेश-पेश रहने वाले, ग़ुर्बत के अतिरिक्त दूसरों की माली सहायता करने वाले थे और हमदरद और नेक इन्सान थे। मरहूम ने दो बीवीयां और तीन छोटी बेटियां यादगार छोड़ी हैं। दो बेटियां वक़्फ़ नौ में शामिल हैं।

वसीम मुहम्मद साहिब सदर जमाअत उनकी ख़िदमात में वर्णन करते हैं कि सीरिया के हालात ऐसे थे कि जब भी कहा जाता था खासतौर पर मरीज़ों और ज़ख़मीयों को हस्पताल पहुंचाना होता था तो उन हालात में बेधड़क हो के यह काम किया करते थे। इसी तरह मजालिसे आमिला के मैंबरान को दौरों पर ले जाना। कार उनको ले दी थी। इसके साथ यह काम करते थे। जब काम होता फ़ौरन पहुंच जाते। बड़ी प्रसन्नता से ख़िदमत करते और उत्साह से ये सारे काम किया करते। चंदे बड़ी पाबंदी से अदा करते जो आख़िरी वर्ष में बहुत बढ़ गए थे। अहमदियों की माली सहायता भी किया करते थे। फिर यह लिखते हैं कि मरहूम ने अपनी सादगी, कम बोलने, इख़लास और ख़िदमत-ए-ख़लक़ और हुस्न-ए-नीयत की वजह से सब पर नेक प्रभाव छोड़ा है।

मरहूम की पत्नी ख़दीजा अली साहिबा कहती हैं। मेरे मियां अल्लाह के फ़ज़ल से बहुत मुख़लिस अहमदी थे। जमाअत से बहुत मुहब्बत करने वाले थे। लोगों की सहायता करना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। घर के कामों में मेरा हाथ बटाते थे। अपनी बेटीयों से बहुत मुहब्बत करते और उनकी नेक तर्बीयत का ख़्याल रखते थे। उनके साथ बैठ कर देर तक जमाअत के बारे में बातें किया करते। अल्लाह के फ़ज़ल से आप ने अपनी ज़िंदगी का आख़िरी वर्ष भी जमाअत की ख़िदमत में गुज़ारा और इस बात से बहुत ख़ुश थे।

उनके ख़ालाज़ाद भाई अकरम सलमान साहिब हैं वह कहते हैं कि उन्होंने और उनके भाई नयान के द्वारा से बैअत की थी। कहते हैं हम बैअत से पहले भी मरहूम के उच्च आचरण के गवाह हैं। ख़ुद उनके अपने माली हालात बहुत अच्छे नहीं थे। फिर भी वह ग़रीब रिश्तेदारों की सहायता किया करते थे। कहते हैं जिस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया वह यह है कि एक बार बहुत अच्छी नौकरी उनको मिल गई जिससे उनके सारे क़र्ज़ उतर गए। यह भाई कहते हैं कि इसके बाद उन्होंने अतिरिक्त माल जमा कर के मेरी ग़रीब ख़ालाओं को एक बड़ी रक़म अदा की और कहा करते थे कि जब मेरी सेहत अच्छी है और मेरे पर कोई क़र्ज़ नहीं तो मैं अमीर हूँ और मैं ज़रूरत से ज़्यादा माल मुहताजों पर ख़र्च करना चाहता हूँ और चाहिए। कहते हैं यह बात मेरे लिए बड़ी हैरत-अंगेज़ थी क्योंकि मैंने ज़िंदगी-भर ऐसी क़नाअत और माली क़ुर्बानी की ऐसी ताक़त किसी में नहीं देखी। फिर यह कहते हैं कि हम दोनों भाईयों की बैअत के बाद हमारी शिक्षा और तर्बीयत और ख़िलाफ़त के साथ जोड़ने के लिए बड़ी मेहनत की। हमें बरकाते ख़िलाफ़त से लाभान्वित होने की बहुत घटनाएं सुनाते थे जिस से हमारे दिलों में ख़िलाफ़त की मुहब्बत पैदा हुई। उनके भाई मातज़ कज़क साहिब जो जामिया कैनेडा के उस्ताद हैं लिखते हैं कि मेरे मरहूम भाई बहुत मुख़लिस और ख़िलाफ़त से मुहब्बत करने वाले थे। जबकि हमारे बाप दादा अहमदी थे परन्तु हमें अहमदियत का कोई ज्ञान नहीं था। मेरे भाई अपने दादा ख़िज़र कज़क साहिब की नमाज़ जनाज़ा में शिरकत के लिए हलब शहर से दमिशक़ गए जहां उनकी मुलाक़ात अहमदी लोगों से हुई और जमाअत के बारे में विचार विमर्श हुआ। वापस आने के बाद मैंने देखा कि वह सज्दों में बहुत ज़्यादा रोने लग गए हैं। इस अचानक के बदलाव पर मैं बहुत हैरान हुआ। इस की वजह पूछी तो उन्होंने मुझे भी जमाअत का परिचय कराया। फिर कहते हैं मैंने तहक़ीक़ की। पहले तो नाम के अहमदी थे फिर बाक़ायदा तहक़ीक़ की कि जमाअत की तालीम क्या है और एक स्वप्न देखने के बाद मैंने पुन: बैअत कर ली। मेरी बैअत में मेरे भाई की नेक तबदीली का बड़ा किरदार था। पुन: से मुराद है कि एक तो पहले ख़ानदानी तौर पर, रस्मी तौर पर तो अहमदी चलते आ रहे थे लेकिन अमलन अहमदी नहीं थे इसलिए पुन: समझ के बैअत की। मरहूम को तब्लीग़ का भी बहुत शौक़ था। ख़लीफ़-ए-वक़्त के लिए बहुत दुआएं करते थे। निज़ाम

पृष्ठ 1 का शेष

और उसका कर्तव्य है कि वह अपनी हर चीज़ को इस उद्देश्य के लिए क़ुर्बान कर दे। यहाँ तक कि यदि सम्मान और नेक-नामी भी क़ुर्बान करनी पड़े तो वह उस की परवाह न करे। एक नबी अगर क़ैदख़ाने में हो तो वह या तो तब्लीग़ नहीं कर सकेगा या उस की तब्लीग़ सीमित होगी। यदि वह इस दृष्टिकोण से अपनी आज़ादी को देखे तो उसकी बहुत बड़ी क़ुर्बानी होगी। यदि वह बग़ैर सफ़ाई के क़ैद से निकल आए और अपने काम के मुक़ाबला में अपने सम्मान की परवाह न करे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की घटना का वर्णन करते हुए अपने लिए आख़िरी तरीक़ को पसंद किया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि لَوْ لَبِثْتُ فِي السِّجْنِ مَالَبِثَ يُوْسُفُ لَاَ جَبْتُ الدَّاعِي अगर मैं इस क़दर देर क़ैद में रहता जिस क़दर यूसुफ़ रहे थे तो मैं बुलाने वाले की बात को क़बूल कर लेता। (बुख़ारी और मुस्लिम अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से) और मस्नद अहमद हनबल में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से ही रिवायत है لَاَسْرَعْتُ الْاِجَابَةَ وَمَا ابْتَغَيْتُ الْعُذْرَ मैं तुरंत बात क़बूल कर लेता और यह उज्र नहीं करता कि पहले मेरी रिहाई करो। हर अक़लमंद इन्सान समझ सकता है कि दोनों स्थानों में से वह स्थान ज़्यादा बुलंद है जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने लिए पसंद फ़रमाया है क्योंकि जबकि सम्मान की रक्षा एक आला दर्जा का काम है लेकिन यदि इस बात को दृष्टिगत रखते हुए कि तब्लीग़ के काम में हर्ज न हो या और किसी ऐसे काम के लिए जो क़ौमी या शरई या दीनी हो इन्सान अपने सम्मान को क़ुर्बान कर दे और अपने पर इल्ज़ाम को रहने दे तो यह व्यक्ति यक़ीनन उस व्यक्ति से जो अपने सम्मान की रक्षा का मुतालिबा किसी नेक इरादा से करता है ज़्यादा उच्च स्तर पर है।

(तफ़सीर कबीर, भाग 3, पृष्ठ 324 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

☆ ☆ ☆ ☆

वसीयत में शामिल थे। मरहूम को अपनी वफ़ात के क़रीब होने का एहसास हो गया था जिस का वर्णन उन्होंने वफ़ात से कुछ दिन पूर्व अपने पिता साहब और अपनी पत्नियों से कर दिया था।

अगला जनाज़ा जो है वह आदरणीया फ़र्हत नसीम साहिबा रब्वा का है जो आदरणीय मुहम्मद इबराहीम साहिब हनीफ़ जो मास्टर सार चोरी साहिब कहलाते थे उनकी पत्नी थीं। 26 दिसंबर को 86 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूमा के पिता हज़रत मियां इल्मे दीन साहब और दादा हज़रत मियां कुतुबुद्दीन साहब लोधी नंगल ज़िला गुरदासपुर के थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम के सहाबा में शामिल थे।

आप बेशुमार ख़ूबियों की मालिक थीं। नमाज़ क़ुरआन की पाबंद, तहज्जुद गुज़ार, सब्र करने वाली और शुकर करने वाली, दुआ करने वाली, सादा-मिज़ाज, गरीबों का ख्याल रखने वाली, ख़िलाफ़त से अत्यधिक प्रेम करने वाली नेक मुख़लिस महिला थीं। माली तहरीकात में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती थीं। कई बार मुख़्तलिफ़ तहरीकात में अपना ज़ेवर पेश करने की भी तौफ़ीक़ पाई। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में तीन बेटे और तीन बेटियां और अत्यधिक नवासे नवासीयाँ और पोते पोतीया शामिल हैं। उनके दो नवासे मुरब्बी सिलसिला भी हैं एक बेटे भी मुरब्बी सिलसिला हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से क्षमा और रहम का व्यवहार फ़रमाए। इन सब मरहूमीन से मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए और इन सब के दर्जात बुलंद फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

पृष्ठ 2 का शेष

समझती हूँ कि हम ईसाई आपके ख़लीफ़ा की आज की तक़रीर से बहुत कुछ सीख सकते हैं और जो मुहब्बत और प्यार आप फैला रहे हैं ये हमें एक बराबर करते हैं।

एक जर्मन मेहमान औरत KATHJA SOMMER साहिबा ने अपने विचारों का इस तरह प्रकटन किया। ऐसे महसूस हुआ जैसे हमारा एक रुहानी बाप है और वह हम से बात कर रहा है और हम सब उस के बच्चे हैं और इस के सामने बराबर हैं। कोई छोटा बड़ा नहीं है।

मैं बेशक ईसाई हूँ और ईसाइयत पर अनुकरण करती हूँ परन्तु आज ख़लीफ़ा के भाषण ने हमारे दलों को छू लिया है। हमने उनकी बातों से बहुत कुछ सीखा है। आपने जो भी वर्णन फ़रमाया हमारे लिए हैरान करने वाला था। मुझे एक बात बहुत प्यारी लगी कि सबसे पहले इन्सानों की सेवा करें। यदि इबादत के लिए जा रहे हों तो किसी को सहायता की आवश्यकता हो तो उस की सहायता करें।

ERIC PIPA साहिब, ज़िला कमिशनर ने कहा समय के ख़लीफा की तक़रीर ने हम पर बहुत अच्छा प्रभाव छोड़ा है। आप ग़ैर मुस्लमान शहरियों से सीधा संबोधित हुए। इस तरह आपने समस्त इन्सानों का एक ख़ुदा की ओर से होने पर ध्यान दिलाया। और यह सिखाया कि एक दूसरे की इज़्ज़त नफ़्स का ध्यान रखो और समस्याओं को अमन की राहों पर चलते हुए हल करो। अब आपकी जमाअत का कर्तव्य है कि आज जो संदेश ख़लीफ़ा ने दिया है इसको पब्लिक तक बहुत अधिक पहुंचाने का प्रयास करें ताकि हम इस क्षेत्र में, जर्मनी में, यूरोप में और पूरे संसार में अमन और प्यार से इकट्ठे रहने वाले बन सकें। मुझे आपकी तक़रीर बहुत पसंद आई है। मुझे इसकी लिखित कापी दें और इस को सबके लिए इंटरनैट पर भी लगाऐं।

शहर HANAU की CDU पार्टी के CHAIRMAN ने कहा :

कुछ लोगों के कारण से समस्त इस्लाम को बदनाम किया जाता है। आज हमने ख़लीफतुल मसीह का भाषण सुना है। अब मैं चाहता हूँ कि इस क्षेत्र का इमाम आकर हमारी पार्टी से भाषण करे और यदि वह आज के ख़लीफ़ा के इस संदेश को इसी ढंग में प्रस्तुत कर पाए तो आसानी से हमारी पार्टी से सोला या अठारह सफ़ीर मिल जाऐंगे जो आज के इस संदेश को आगे पहुंचाएंगे।

एक मेहमान ने कहा : ख़लीफ़ा का भाषण विश्वास से भरा हुआ था और आप के शब्दों का चुनाव बहुत अच्छा था जैसे अमन और हम-आहंगी। ये इक़दार हम में भी हैं परन्तु आप का वर्णन बहुत हमदर्द भरा था। मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

BERND REUTER एक भूतपूर्व मेंबर आफ़ पार्लियामेंट ने कहा :

मेरा यह विश्वास है कि एक मस्जिद समाज में बेहतरी ला सकती है और लाना चाहिए इस तरह से कि इसके माध्यम से लोगों का आपस में सम्पर्क हो और एक दूसरे के विचारों से परिचित हों और एक दूसरे से जान पहचान हो और समझना तथा समझाना हो।

एक मेहमान ने कहा कि मेरे लिए पहले मुश्किल था कि इस्लाम के बारे में कोई अच्छी राय बनाऊं। परन्तु आज ख़लीफतुल मसीह ने जो इस्लाम प्रस्तुत किया है इस इस्लाम को देख कर मुझे लगता है कि इस्लाम अमन और रहम की शिक्षा देने वाला धर्म है। यह कल्पना इस्लाम तथा क़ुरआन के मफ़हूम के अनुसार है।

एक मेहमान ने कहा : ख़लीफ़ा ने इस्लाम की बुनियादी शिक्षाएं प्रस्तुत कीं और बहुत उत्कृष्ट रंग में प्रस्तुत कीं और इसकी बिना किसी शंका का सत्यापन करना ज़रूरी है। मैंने स्वयं तो इस्लाम का अध्ययन नहीं किया परन्तु आज जो ख़लीफतुल मसीह ने कहा वह मुझे बहुत ही सकारात्मक मालूम होता है। मुझे आज तक मालूम नहीं था कि इस्लाम भाईचारा, आपस में हमदर्दी को क़ायम करना और एक दूसरे की इज़्ज़त नफ़्स का विचार रखने की शिक्षा देता है। परन्तु आज बातें सुन कर दिल में बहुत प्रभाव हुआ है।

CHRISTNIE BUCHHOLZ साहिबा मेंबर आफ़ पार्लियामेंट ने कहा :

मुझे महसूस हुआ है कि यहां HANAUमें अहमदिया जमाअत बहुत मक़बूल है। विशेषता आज के ज़माना में जहां मस्जिद बनाना बहुत मुश्किल है और इस्लाम से नफ़रत है। इसलिए आज का उद्घाटन बहुत सकारात्मक रंग रखता है कि लोग आकर इस्लाम के बारे में जान सकते हैं और मस्जिद का एक उद्देश्य यह भी है कि लोग आपस में मिलें। मुझे आज यह अवसर मिला कि क़रीब से ख़लीफ़ा से कुछ बात कर सकूं। खाने के इस अवसर पर मुख़्तसर बातचीत भी हुई और मुझे बहुत अच्छा लगा। ख़लीफ़ा बहुत OPEN और AMUSING हैं। मेरे लिए यह बड़े सम्मान की बात है कि मैं आपसे मिल सकी।

एक मेहमान ने कहा : मुझे ख़लीफ़ा बहुत सम्मान वाले इन्सान मालूम होते हैं जिन्हों ने बहुत उत्तम रूप में भाषण फ़रमाया। इस भाषण ने हम पर बहुत प्रभाव डाला है।

मस्जिद के पड़ोसी में एक जर्मन मेहमान RUFIX साहिब ने कहा आज का प्रोग्राम बहुत अच्छा लगा। मुझे पहले तो जमाअत अहमदिया का कोई ज्ञान नहीं था। दावत के बाद INTERNET पर कुछ मालूमात जमाअत के बारे में प्राप्त कीं और ख़लीफ़ा के भाषण के बाद मुझे ये सब सच्चा मालूम होता है। इस्लाम की जो अब तक कल्पना थी जो आज कल प्रत्येक जगह ग़लत प्रस्तुत की जाती है, अब दुरुस्त हो गया है और सच्ची वास्तविकता मालूम हुई है। और ख़लीफतुल मसीह ने जो यह कहा है कि असल अमन तब सम्भव हो सकता है जब इत्तिफ़ाक़ से इकट्ठा रहा जाए। और यह बिल्कुल मेरे नज़दीक दरुस्त है। आप के ख़लीफ़ा की बातें सच्चाई से भरपूर हैं।

एक मेहमान MURDOC साहिब ने कहा : ख़लीफतुल मसीह का आना और उनका भाषण मुझे बहुत ही प्रभावित करने वाला लगा है। यह बात मुझे बहुत पसंद आई जिसका ख़लीफ़ा साहिब ने वर्णन किया कि खुले दिल से आप पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध क़ायम करेंगे। और यह एक अत्यधिक प्रमुख क़दम है। फिर ख़लीफ़ा साहिब की यह बात कि प्रत्येक इन्सान, जिस धर्म से भी सम्बन्ध रखता हो, इस मस्जिद में आ सकता है और प्रत्येक आपसे सहायता प्राप्त कर सकता है। फिर मुझे ख़लीफ़ा साहिब का यह वाक्य भी ज़हन में है कि इधर मस्जिद में केवल अल्लाह तआला की इबादत के लिए नहीं इकट्ठा हुआ जाता बल्कि इन्सानों की मदद तथा सहायता के लिए भी इधर लोग आते हैं।

एक मेहमान Ronald साहिब ने अपने विचारों को प्रकटन करते हुए कहा "मेरे लिए यह आज का प्रोग्राम अत्यधिक हैरान करने वाला था क्योंकि मेरा इस्लाम के बैरे में कल्पना बिल्कुल ही विभिन्न थी जो कि मीडिया का क़सूर है। परन्तु आज मुझे ख़लीफतुल मसीह के भाषण से मालूम हुआ है कि जो इस्लाम आपकी जमाअत प्रस्तुत करती है वह बहुत उच्च कोटि का है। ख़लीफतुल मसीह का भाषण बहुत प्रभावित करने वाला था और आप रोबदार मालूम हो रहे थे। हम जो प्रोटैस्टैंट हैं उनमें तो ऐसा कोई रुहानी सरबराह नहीं केवल बिशप होते हैं। कैथोलिक्स में तो पोप होता है और उनका स्थान भी इस की तरह का लग रहा है।"

एक मेंबर पार्लियामेंट Bettina Muller साहिबा ने कहा "ख़लीफ़ा साहिब अत्यधिक ही रुहानी व्यक्ति मालूम होते हैं और जो बात वह वर्णन करते हैं उसे एक ऐसे प्रभावित करने वाले ढंग से वर्णन करते हैं जो दूसरे को क़ायल कर लेती है। मेरे पर तो उन्होंने एक ऐसा प्रभाव किया कि मुझे वह बहुत नर्म दिल लगे और प्यार करने वाले। यदि मुझे कहा जाए कि ख़लीफ़ा साहिब के बारे में एक ही शब्द में बताओ तो मैं "नर्म-दिल" कहूँगी।

एक सरकारी कर्मचारी Kazalak साहिब ने कहा :

"मस्जिद का उद्घाटन बहुत ही उच्च रहा और Hanau के समस्त शहरियों के लिए यह मस्जिद लाभ पहुंचाने वाली है। मैं आज के प्रोग्राम से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। ख़लीफतुल मसीह के भाषण ने हम पर गहरा प्रभाव किया है। ख़लीफतुल मसीह बहुत ही बड़े विद्वान मालूम होते हैं और उन का ज्ञान बहुत बुलंद लगता है। मुझे ख़लीफ़ा साहिब बहुत प्यार तथा मुहबत करने वाले और रहम दिल लगे हैं।"

एक मेहमान ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा :

"ख़लीफ़ा का भाषण सुन कर और यह मालूम कर के मुझे हैरत हुई कि इस्लाम और ईसाइयत की शिक्षा में कितनी समानता है। ख़लीफ़ा साहिब की यह बात बहुत पसंद आई कि इबादत से ज़्यादा महत्वपूर्ण तो इन्सानों से अच्छा व्यवहार और प्यार और मुहब्बत से व्यवहार करना होता है। आज ख़लीफतुल मसीह ने प्यार और अमन के हवाले से बातें कीं और यह बहुत ज़रूरी होता है। आजकल लोग इस को भूल रहे हैं।"

Hanau शहर के लार्ड मेयर ने कहा :

"आज का उद्घाटन अत्यधिक ही महान था और विशेषता ख़लीफ़ा साहिब के भाषण ने इस बात को स्पष्ट किया कि कौन सी बात असल में एहमीयत की हामिल है। यह माटो "मुहब्बत सब के लिए और नफ़रत किसी से नहीं" एक ऐसा माटो है जिसकी हमें न सिर्फ Hanau में आवश्यकता है, बल्कि पूरे जर्मनी में, यूरोप में और दुनिया-भर में इस की हमें आवश्यकता है ताकि हम उन लोगों के विरुद्ध मिल कर आवाज़ बुलंद कर सकें जो नफ़रत फैलाना चाहते हैं। ख़लीफतुल मसीह एक बहुत प्रभावित व्यक्तित्व और रोबदार व्यक्ति हैं जो अपना संदेश एक अत्यधिक ज़बरदस्त ढंग से दूसरों तक पहुंचाते हैं। और यह संदेश दिलों पर-असर करता है। वह बहुत प्रभावी और मज़बूत हैं। मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि आज उनसे मिलने का अवसर मिला है।"

एक मेहमान महिला ने हुज़ूर अनवर के मुबारक मुख का वर्णन करते हुए कहा

"हुज़ूर के चेहरे से मुहब्बत और अमन झलकता है। और एक अजीब सुकून नज़र आता है। इसी तरह एक और मेहमान महिला ने कहा कि वह इस बात पर हैरान थीं कि कैसे हुज़ूर की आमद के साथ ही ख़ामोशी छा गई और अमन का दरिया फ़िज़ा में फैल गया।"

एक मेहमान ने बातचीत के मध्य कहा : "समाजी कामों के लिए हुज़ूर अनवर की प्रयास प्रशंसा के योग्य हैं। और मैं इस बात का शुक्रगुज़ार हूँ कि हुज़ूर अनवर जमाअत को भलाई के रास्ते पर चला रहे हैं और आज ख़लीफ़ा ने केवल जमाअत के लिए ही नहीं बल्कि सारी इन्सानियत के लिए संदेश भेजा है।"

एक जर्मन मेहमान हुज़ूर अनवर की तक़रीर से बहुत प्रभावित थे कहने लगे

"हुज़ूर अनवर का यह फ़रमाना चूँकि पहले यहां एक सुपर मार्केट थी इस लिए यहां लोग भोतिक आवश्यकताओं को ख़रीदते थे और अब यहां से रुहानी और अख़लाक़ी इक़दार प्राप्त किए जा सकेंगें। इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इसी तरह एक और साहिब ने इस प्रकार तबसरा किया कि हुज़ूर के शब्द बहुत ज़बरदस्त हैं और विश्वास से पूर्ण हैं।"

एक सियास्तदान ने जाते-जाते कहा : "इतनी मुनज़्ज़म जमाअत मैंने कभी नहीं देखी । और मैं किसी ग़लती की ओर निशान देही नहीं कर सकता।"

एक महिला के विचार मस्जिद के सेहन में आने पर ये थे :"जब मैंने क़दम ही रखा था तो मुझे एक अजीब अमन का एहसास हुआ।"

एक इंजीनियर जिसने मस्जिद की बनने में काम भी किया उस का कहना था

"हुज़ूर ने जितनी भी बातें कीं, मैं इन सबसे मुकम्मल इत्तिफ़ाक़ करता हूँ। उनका यह भी कहना था कि मेरा विचार था कि यह समारोह चर्च की समारोहों की तरह होगा जिनमें ज़्यादा दिखावा होता है। परन्तु यह एक सादा परन्तु बहुत सुंदर समारोह था जिस में मुझे ऐसा लगा कि संसार और धर्म में कोई ज़्यादा अंतर नहीं है।"

एक साहिब जो अपनी पत्नी के साथ आए थे बातचीत के मध्य कहने लगे :

"पर्दे का जो उसूल इस्लाम सिखाता है वह सही है। इसी तरह उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि यदि दूसरे धर्मों और फ़िर्क़ों के सरबराहान भी ये बातें कहें जो हुज़ूर फ़र्मा रहे हैं तो बहुत ख़ुशी हो।"

कई लोगोंने इस बात पर इंतिहाई ख़ुशी का प्रकटन किया कि हुज़ूर अनवर ने यह संदेश दिया है कि इस मस्जिद के दरवाज़े सब के लिए खुले हैं

"मस्जिद बैयतुल वाहिद 'HANAU' के इस उद्घाटन समारोह के बाद नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस बैयतुल सबूह फ्रैंकफ़र्ट जाने के लिए रवाना हुए।

साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बैयतुल सुबूह में तशरीफ़ आवरी हुई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ मग़रिब-और-इशा जमा कर के पढ़ाई।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

27 मई बुध के दिन 2015 ई.

इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंटमीडिया ने "मस्जिद बैयतुल वाहिद" के उद्घाटन के प्रोग्राम को COVERAGE दी

मस्जिद बैयतुल वाहिद Hanau के उद्घाटन की ख़बरें मीडिया में

Bild अख़बार ने मस्जिद बैयतुल वाहिद के उद्घाटन के हवाले से ख़बर देते हुए लिखा :

(यह जर्मनी का सबसे बड़ा समाचार पत्र है और उसने अपने क्षेत्र के ऐडीशन में मस्जिद के उद्घाटन की ख़बर देते हुए लिखा है कि)

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के 64 साला रुहानी पेशवा ख़लीफ़ा मिर्ज़ा मसरूर अहमद लंदन से पधारे हैं। लार्ड मेयर ने कहा कि पहले-पहल लोगों में ख़ौफ़ पाया जाता था। परन्तु पारदर्शिता openness और सम्बंधित लोगों के साथ बातचीत के माध्यम से हम इस को जल्दी ही ख़त्म करने में कामयाब हो गए। फिर लिखा है कि मेयर ने बताया कि वहां 127 कौमे और 20 धर्मों और फ़िर्क़ों से सम्बन्ध रखने वाले लोग आज़ादी-ए-ज़मीर और धर्म का समर्थन करते हैं। सहिष्णुता एक चैलेंज है, जो हर-रोज़ हमें नए सिरे से शुरू करना है। एक दूसरे के साथ मिलकर और एक दूसरे की इज़्ज़त करते हुए द्वेष को कम किया जा सकता है।

His holiness मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कहा यहां अब कोई भौतिक वस्तुएं बेचीं नहीं की जाएँगी। यह अब ख़ुदा का एक घर है। इस में वह चीज़ें प्रस्तुत की जाएँगी जो बुलंद और ख़ूबसूरत अख़लाक़ी इक़दार को प्रकट करें। मुहब्बत, भाईचारा और हमदर्दी इस घर से फैलेंगे। हम समस्त इन्सानों के लिए, जो मुश्किलात में ग्रस्त हों, उपस्थित हैं, यह मस्जिद समस्त इन्सानों और धर्मों के लिए खुली है।

परन्तु उन्होंने ख़बरदार भी किया कि यदि हमारी सफ़ों में किसी ने बदअमनी फैलाने का प्रयास किया, तो हम मुल्की क़वानीन के अनुसार उसके विरुद्ध करवाई करें गे। संसार को तशद्दुद और इंतिहापसंदी की आवश्यकता नहीं। अमन एक बड़ी दौलत और मतम्मा नज़र है।

अख़बार ने इसके साथ मस्जिद की तस्वीर और हुज़ूर की तस्वीर दी है ।

Hanau के स्थानीय अख़बार Hanauer Anzeiger ने अपनी 29/मई 2015 ई.के प्रकाशन में लगभग आधे पृष्ठ की ख़बर दी है।

मोमिनीन के लिए एक बड़ा दिन :

लिखा है कि ख़लीफ़ा, जिन्हें उनके पैरोकार और लार्ड मेयर इज़्ज़त से Your Holiness कह कर संबोधित करते हैं, ने इस बात पर-ज़ोर दिया कि उनकी जमाअत एक शान्ति प्रिय जमाअत है । इस जमाअत का एक महत्वपूर्ण माटो प्रेम सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं है। 200 से अधिक मेहमानों और कम से कम इतने ही मानने वालों के सामने बर्तानिया से आने वाले ख़लीफ़ा ने धर्मों के मध्य सुलह और तवाज़ुन की नसीहत की। कहा कि अहमदी मुस्लमानों का कर्तव्य है कि इन्सानों की सेवा करें। उनकी मस्जिदें और केंद्र ग़ैर मुस्लिमों के लिए भी खुले हैं। परन्तु प्रत्येक संसार की हुकूमत का भी यह काम है कि समस्त इबादत गाहों की हिफ़ाज़त करें, चाहे वह ईसाई हों, यहूदी, मुस्लमान, बोध या कोई और

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कहा कि संसार को लड़ाई, शोषण, और उग्रवाद की आवश्यकता नहीं। संसार को मुहब्बत, सब्र और अमन की आवश्यकता है। इसके बाद जमाअत के क़ानूनी स्टेटस, स्कूलों में इस्लामीयात की शिक्षाऔर लार्ड मेयर की तक़रीर इत्यादि का वर्णन किया है। अमीर साहिब, शोबा सौ मस्जिदें के कार्यकर्ताओं का वर्णन है। इसी तरह मस्जिद की तफ़सीलात, लागत इत्यादि बताई है।

Echoअख़बार ने मस्जिद बैयतुल वाहिद के उद्घाटन के हवाले से ख़बर देते हुए लिखा :

सूबा हासन् की बड़ी मस्जिदें में से एक का बुध के दिन उद्घाटन हुआ जिस में जमाअत के रूहानी सरबराह शामिल हुए। ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद लंदन से पधारे थे। यह अहमदिया मुस्लिम जमाअत की मस्जिद है जो कि पहली और अब तक वाहिद मुस्लमान तंज़ीम है जिस के पास विशेष क़ानूनी स्टेटस उपस्थित है और इस तरह ईसाई फ़िर्क़ों के बराबर हैं। मस्जिद के सम्बन्ध में बताया है कि इस में 500 लोग की इबादत की गुंजाइश है। ख़लीफ़ा ने नमाज़ की इमामत की और इसके बाद लार्ड मेयर के साथ अखरोट के दो दरख़्त लगाए। लार्ड मेयर Kaminsky ने कहा कि उनकी इच्छा है कि मस्जिद इस बात में सहायक साबित हो कि विभिन्न धर्मों और पृष्ठभूमि के लोग डायलॉग के माध्यम एक दूसरे को बेहतर तौर पर जान सकें और द्वेष कम हो। जमाअत अहमदिया के वर्णनके अनुसार जुमा का ख़ुतबा जर्मन भाषा में भी होगा। यह इस बात का एक निशान होगा कि अहमदी मुस्लमान जर्मनी में जज़ब होना चाहते

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 22 April 2021 Issue No.16

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हैं। सूबा हासन् में जमाअत की 15 मस्जिदें हैं।

Hanau के ही एक और स्थानीय अख़बार Hanauer Post ने 29/ मई 2015 ई.के प्रकाशन में लगभग आधे पृष्ठ की ख़बर दी

ख़लीफ़ा के पधारने के कारण से आँसू
मस्जिद के उद्घाटन पर भावनाओं का प्रकटन

एक अहमदी नौजवान नवीद अहमद के हवाले से लिखा है कि उसने फ्रैंकफ़र्ट से आकर सेवा के तौर पर डयूटी देता कि वह ख़लीफ़ा को एक नज़र देख सके। अन्यथा उसे उसका अवसर नहीं मिलना था। जमाअत अहमदिया के लोग के लिए उनके आलमी सरबराह की यात्रा बहुत एहमीयत रखती है। एक नौजवान ने कहा कि यहां उपस्थित होना और उनको देख सकना मेरे लिए सब कुछ है। ये बहुत भावनात्मक अवस्था है। हमारा ईमान है कि ख़लीफ़ा ख़ुदा ने मुंतख़ब किया है। मस्जिद में नमाज़ पढ़ते समय अपने पेशवा के साथ नए क़ालीन पर घुटने टेकते और अपने ख़ुदा से बात करते हुए बहुत से मर्दों की आँखों में आँसू थे। अख़बार ने मस्जिद की तफ़सील और मेहमानों का वर्णन किया है। समारोह में अधिकतर संख्या मेहमानों की थी। ख़लीफ़ा ने अपनी तक़रीर में कहा इस से मालूम होता है कि ये खुले दिल के लोग हैं और हमें यहां स्वागत कहते हैं। वहां एक बैनर पर लिखा था वतन की मुहब्बत ईमान का हिस्सा है और इस बात पर मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने अपनी तक़रीर में ज़ोर दिया। अहमदी मुस्लमानों के उच्च आचरण मूल्य हैं। हम सहायता करने को तैयार और अपने पड़ोसियों का ख्याल रखते हैं। हम एक हम-आहंगी और मुहब्बत की फ़िज़ा क़ायम करना चाहते हैं। और कोई बदअमनी पैदा नहीं करते। ख़लीफा ने Hanau मस्जिद के बनने में तआवुन करने वालों का शुक्रिया अदा किया और इसके बाद लार्ड मेयर की तक़रीर का वर्णन किया है।

अख़बार Gelenhauser neue Zeitung जर्मनी की सबसे ख़ूबसूरत आलडी

(Aldi) वह सुपरमार्केट है जो अब मस्जिद में तबदील की गई है और जर्मनी भर में बहुत प्रसिद्ध है।

कभी यहां लोग प्रतिदिन की आवश्यकता की चीज़ें ख़रीदने आते थे। अब यहां वह कुछ प्रस्तुत किया जाएगा जो पैसे से नहीं ख़रीदा जा सकता। इन शब्दों के साथ ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद, जो कि मुस्लमान धार्मिक तंज़ीम अहमदिया मुस्लिम जमाअत के धार्मिक पेशवा हैं, इस बात की ओर इशारा किया कि यह जगह जहां लोग इबादत के लिए इकट्ठा हुआ करेंगे पहले एक सुपर मार्केट थी। इसके बाद मस्जिद और जमाअत का मुख़्तसर परिचय दिया है।

टेलीवीज़न चैनल RTL ने 29/मई 2015 ई.की शाम को हुज़ूर अनवर का संक्षेप में इंटरव्यू प्रसारित किया।

इस पर 2 मिनट 23 सैकिण्ड की ख़बर उसी दिन प्रसारित हुई। ख़बर में मस्जिद के उद्घाटन के दृश्य जमाअत के लोग और नज़्में पढ़ने वाली बच्चीयों को दिखाया गया। हुज़ूर की आमद, समारोह में शमूलीयत, नमाज़ पढ़ाने के दृश्य हैं। हुज़ूर का यह वर्णन दिखाया है कि हम सारे संसार और यूरोप में मस्जिदों बनाया करते हैं। यह हमारा उद्देश्य है। हम चाहते हैं कि संसार को इस्लाम की सही शिक्षाएं प्रस्तुत कर सकें। बताया गया है कि यहां पहले सुपर मार्केट थी अब मस्जिद बन गई है।

इस मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से कल 50 ख़बरें प्रकाशित हुई हैं। अधिकतर अख़बारात ने उद्घाटन से पहले भी एक ख़बर दी थी कि उद्घाटन होने वाला है और फिर दुबारा ख़बर दी है।

28 मई जुमेरात के दिन 2015 ई.

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में दर्जा दौम (दुसरी श्रेणी) की नौकरी पर ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

शर्तें (1) प्रत्याशी की आयु 25 वर्ष से अधिक न हो (2) प्रत्याशी की शिक्षा कम से कम10+2 (45 प्रतिशत अंको के साथ) होनी चाहीए (3) प्रत्याशी उर्दू/ अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो। प्रति मिनट में 25 शब्दों की कम्पोज़िंग की तीव्रता हो। (4) इस विज्ञपन के बाद 2 महीने के अंदर जो निवेदन आएंगे उन्हीं पर ग़ौर होगा (5) निमंलिखित निसाब के अनुसार परीक्षा ली जाएगी, परीक्षा के हर भाग में सफ़ल होना अनिवार्य है।

भाग प्रथम : क़ुरआन-ए-करीम सादा पूर्ण, पहला पारा अनुवाद के साथ चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, नमाज़ मुकम्मल अनुवाद के साथ (30 अंक)

भाग दो : कशती नूह, बरकात दुआ, दीनी मालूमात लेख जमाअत अहमदिया के सिद्धानोतों के बारे में
नज़्म दुर्रे समीन (शाने इस्लाम) (20अंक)

भाग तीन : अंग्रेज़ी का मयार बारवी कक्षा तक के अनुसार (10+2)(20अंक)

भाग चार गणित दसवी कक्षा तक के अनुसार (20अंक)

भाग पांच साधारण ज्ञान (10अंक)

(6) लीखित परीक्षा में सफ़ल होने वाले प्रत्याशी का ही इंटरव्यू होगा (7) लीखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट-और-इंटरव्यू में सफ़लता की अवस्था में उम्मीदवार को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही उम्मीदवार सेवा के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के चिकित्सा परीक्षण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे (8) स्लैक्शन की अवस्था में उम्मीदवार को क़ादियान में अपनी रिहायश की व्यवस्था स्वयं करनी होगी (9) क़ादियान आने जाने का खर्च प्रत्याशी के अपने ज़िम्मा होंगे। (नोट : लिखित परीक्षा और साक्षात्कार की तिथि से प्रत्याशीयों को बाद में अवगत किया जाएगा।

अधिक मालूमात के लिए संपर्क करें : नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड 143516 -

मोबाइल : 09682627592 09682587713, दफ़्तर : 01872 - 501130
E-mail: diwan@qadian.in

☆ ☆ ☆ ☆

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और दुनिया-भर के विभिन्न देशों की ओर से प्राप्त होने वाली रिपोर्टस और पत्र देखे। जब से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जर्मनी में रह रहे हैं, दुनिया की विभिन्न जमाअतों से प्रतिदिन फैक्सज़ और ई.मेल के माध्यम से पत्र और रिपोर्टस प्राप्त होती हैं। इसी तरह यहां जर्मनी की विभिन्न जमाअतों के लोग की ओर से भी सैंकड़ों की संख्या में पत्र प्राप्त होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रतिदिन साथ के साथ यह सारी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और हिदायात से नवाज़ते हैं।

नमाज़ ज़ुहर तक हुज़ूर अनवर विभिन्न प्रकारों के दफ़्तरी मामलों की अदायगी में व्यस्त रहे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मध्याह्न दो बजे पधार कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला अपनी जाए रिहायश पर तशरीफ़ ले गए।

पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के विभिन्न दफ़्तरी मामलों की अंजाम दही में मस्रूफ़ियत रही।

(शेष आगे .....)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad